अक्तूबर (प्रथम) 2021 कीमत : 10.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज खरी आवाज

21वीं सदी का बड़ा मुद्दा है बढ़ता बांझपन

● 6 कहानियां ● जब होटल में पकड़े जाएं ● रोहतक हत्याकांड ● पाकिस्तान क्रिकेट हुआ कमजोर ● कृति सेनन करेंगी हैरान

VISIT…

LANZAROTE

Caliente.COM

Piramal

टेटमोसॉल 20:20 कप कॉन्टेस्ट

टेटमोसॉल रोज़ लगाना^ मतलब वर्ल्ड कप के दौरान इनाम जीतने का मौक़ा पाना!

Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL

सभी मैचेस के सही विजेता बताओ और ₹1 करोड़ धन राशी जीतने का मौक़ा पाओ!*

1 विजेता

कम से कम **30** मैचेस का सही अनुमान लगाएं और गाडी जीतने का मौक़ा पाएं

मारुति सुज़ुकी स्विफ्ट, ZXI मैनुअल (पेट्रोल)

2 विजेता

कम से कम **20** मैचेस का सही अनुमान लगाएं और बाइक जीतने का मौक़ा पाएं

बजाज पल्सर 150

5 विजेता

कम से कम **15** मैचेस का सही अनुमान लगाएं और **AC** जीतने का मौक़ा पाएं

वोल्टास 1.4 टन, 5 स्टार AC

10 विजेता

कम से कम **10** मैचेस का सही अनुमान लगाएं और फ्रिज जीतने का मौक़ा पाएं

सैमसंग 253 L डबल डोर रेफ्रिजरेटर

50 विजेता

1 आसान प्रश्न का सही उत्तर दें और टेटमोसॉल के साथ सेल्फी अपलोड करें**

100% कॉटन बेडशीट, 2 पिलो कवर के साथ

प्रतियोगिता में कैसे प्रवेश करें?

पहला कदम
यहाँ दिए गए या पैक पर दिए गए **QR** कोड को स्कैन करें या www.tetmosolcontest.in पर लॉग-ऑन करें

दूसरा कदम
अपनी जानकारी भरें

तीसरा कदम
1 आसान प्रश्न का सही उत्तर दें और टेटमोसॉल साबुन रैपर या डस्टिंग पाउडर के साथ सेल्फी अपलोड करें**

चौथा कदम
सभी मैचेस का सही अनुमान करें

TE/20210921-38

नियम और शर्तें: यह प्रतियोगिता 22 सितंबर से 16 अक्टूबर, 2021 तक मान्य है। यह प्रतियोगिता तमिलनाडु राज्य को छोड़कर भारत के बाकी सभी निवासियों के लिए खुली है। प्रत्येक प्रतिभागी की केवल एक ही प्रविष्टि मान्य होगी। एक मोबाइल नंबर से केवल एक ही प्रविष्टि मान्य होगी। एक से अधिक प्रविष्टि होने पर केवल पहली प्रविष्टि ही मान्य होगी। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पैन कार्ड विवरण साझा करना आवश्यक होगा (बेडशीट के पुरस्कार को छोड़कर)। ₹1 करोड़ का इनाम केवल एक ही प्रतियोगि को जीतने का मौका लकी ड्रॉ के द्वारा मिलेगा। **प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोडक्ट की खरीद का सबूत अनिवार्य नहीं है। अमान्य प्रविष्टियां यानी तारीख के बाद, अस्पष्ट, एक से अधिक, भ्रामक/गलत/गलत तरीके से प्रस्तुत करने वाली या/और अधूरी प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी। ^टेटमोसॉल साबुन का उपयोग खुजली (स्केबीज) कणों द्वारा हुए संक्रमण के लिए किए जाता है। टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। संक्रमण की संभावना रहने तक ही लगाए। सभी 45 मैचेस समाप्त होने के बाद 45 दिनों के भीतर विजेताओं की घोषणा हमारे सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से की जाएगी। अगर मान्य प्रविष्टियों की कुल संख्या कुल पुरस्कारों से कम होती है तो योग्य विजेताओं की संख्या को संशोधित या इनाम बदलने का अधिकार कंपनी के पास सुरक्षित होगा। पुरस्कारों की छवियों का उपयोग केवल प्रतिनिधि उद्देश के लिए किया गया है। किसी भी मानदंड पर कई प्रविष्टियां होने पर, विजेताओं को लकी ड्रॉ के आधार पर घोषित किए जाएंगे। आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 194बी के अनुसार टीडीएस के प्रति देयता विजेता की होगी और पुरस्कार के वितरण के बाद टीडीएस के प्रति इस तरह की देयता को विजेता से एकत्र किया जाएगा। नियम और शर्तों की जानकारी के लिए www.tetmosolcontest.in पर लॉग-ऑन करें।

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE
सुनो जी, दशहरे का पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए मनाते हैं। पर शरीर की बुराईयों का क्या करें।
अरी भाग्यवान, शरीर की बुराईयों की जड है पेट की बीमारीयाँ जैसे कब्ज, ऐसीडिटी, अपच इत्यादी, जिनका नाश करता है स्टोमाफिट। क्युंकि पेट फिट, तो आप फिट!!
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
New Pack
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
STOMAFIT
CHEWABLE

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

रखे स्टमक फिट, पेट फिट, आप फिट!!

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

क्रोध, कपट, कटुता, कलह, चुगली या अत्याचार !
दगा, द्वेश, अन्याय या छल ये थे दशानन के हथियार !!
वर्तमान का हथियार है, शरीर में कमजोरी रहना लगातार !
आओ हेमोकॉल के साथ करें इस दशानन पर प्रहार !!

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

आपको और आपके परिवार को
दशहरे
की हार्दिक शुभकामनाएं

**शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि**

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्केन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com
सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपल्बध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्केन करें

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज

संस्थापक : विश्वनाथ (1917-2002)

अक्तूबर (प्रथम) 2021
अंक: 689

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक वासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरिन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं–

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
· Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 10 रु., एक साल के लिए 535 रु., 2 साल के लिए 1069 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, नईगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

गहरी पैठ

नरेंद्र मोदी के जन्मदिन को ही बेरोजगार दिवस जोरशोर से मना कर भारतीय जनता पार्टी के सामने खड़ी पार्टियों ने यह जता दिया है कि केवल नारों और वादों से देश की मुसीबतों का हल नहीं किया जा सकता. भारतीय जनता पार्टी जिस हिंदूहिंदू और मंदिरमठ के नाम पर राज कर रही है उस की पोल खुल रही है क्योंकि देश की क्या किसी भी आम जने की समस्या का हल पूजापाठ और मंदिर नहीं हैं, समस्या का हल तो नए कारखाने, नए व्यापार और उन को बल देने वाली उच्च तकनीकी शिक्षा है.

कोविड के कहर से दुनियाभर की सरकारों को अपने काम समेटने पड़े हैं और जनता की जान बचाने के लिए लौकडाउन करने पड़े थे पर उन देशों ने इस मौके का इस्तेमाल अपने नेता के गुणगान में नहीं किया. हमारे यहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार कोविड की मार से कराह रहे देश को नए कानूनों, नए टैक्सों और जन्मदिनों की दवा दे रही है, कोई सहायता नहीं. यह नई बात नहीं है.

हमारे किसी भी पौराणिक ग्रंथ को पढ़ लें. उस में वही सोच मिलती है जो आज भाजपा सरकार की है. शिव पुराण की पहली पंक्तियों में ही एक ऋषि का दूसरे से मिलने पर अपने जन्म को तर जाना कहता है. भाजपा भी जनता से यही कह रही है कि हम पूजने के लिए आप को मिल रहे हैं, यह काफी नहीं है क्या. प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर 3 सप्ताह तक अखंड जागरण सा माहौल करना जताता है कि पार्टी और उस की सरकार के पास न कोई ठोस सोच है, न रास्ता. वह खोदखोद कर पूजापाठी स्टंटों को ढूंढ़ रही है और यह जनता की मूर्खता है कि इस भुलावे में है कि इस से उस का कल्याण हो जाएगा.

इस देश की माटी में बहुत दम है. यहां की बारिश और गरमी भी सही जा सकती है और सर्दी भी. यहां आराम से उत्पादन भी हो रहा है और खेती भी. और इसीलिए सदियों से यहां के राजाओं और मंदिरों की शानबान की चर्चा दूसरे देशों में होती रही और पहाड़ों या पानी के रास्ते विदेशी इस देश में आते रहे, कुछ बसने के लिए, कुछ राज करने के लिए तो कुछ लूटने के लिए. आज बाहरी लूट से तो हम आजाद हैं पर सरकारी नीतियों और सत्ता ने जनता को अपना गुलाम बना कर लूटना शुरू कर रखा है.

नरेंद्र मोदी ने ऋषि का रूप धारण कर के यह बताना चाहा है कि वे तो मोहमाया के झंझटों से दूर हैं, फकीर हैं और झोले वाले हैं. तो फिर उन को अपने जन्मदिन को गाजेबाजे से मनवाने की क्या जरूरत थी कि विपक्ष को उसे बेरोजगार दिवस कहने का मौका मिल गया.

इस देश की दिक्कत यही रही है कि यहां की आम जनता मेहनती और कम में संतोष करने वाली रही है वहीं पर अपने हकों को दूसरों के हवाले करने वाली भी रही है. गांव का पुजारी हो, ठाकुर हो, इलाके का हाकिम हो या देश का राजा, उसे सिर्फ पूजना आता है. जो राजा बनता है वह पुजवाने का आदी हो जाता है. नरेंद्र मोदी ने 2014 में अपनी जो छवि सीधे, शरीफ व्यक्ति की बनाई थी उस पर सूटबूट तो जड़ ही गए, अब 21 दिनों के जन्मदिनों के धागे भी बंधने लगे हैं.

यह व्यक्ति पूजा ही की आदत है जो जनता को महंगी पड़ती है. पूजापाठी जनता को सिखाया ही यही जाता है. या तो उस का उद्धार कोई ऊपर वाला करेगा या राजा.

* * *

सरकार अब वही कर रही है जो आमतौर पर अकाल या बाढ़ का शिकार किसान करता है या नौकरी छूट जाने पर उस की पत्नी करती है. जमीन और जेवर बेच कर काम चलाना. सरकारी खर्च तो आज भी बेतहाशा बढ़ रहे हैं क्योंकि इस सरकार को किफायत करने की आदत है ही नहीं. चूंकि देश की माली हालत नोटबंदी के बाद से खराब होती जा रही है जिस को जीएसटी और कोरोना ने और खराब कर दिया, खर्च के हिसाब से सरकार की आमदनी नहीं हो रही.

पैट्रोल और डीजल के दाम अगर बढ़ रहे हैं तो इसीलिए कि सरकार के पास इन को महंगा कर के वसूली करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है. कहने को तो सरकार ने उज्ज्वला गैस प्रोग्राम में 9 करोड़ घरों को गैस कनैक्शन दिए पर जब गैस सिलैंडर 850 रुपए से 1,100 रुपए तक का हो यह उज्ज्वला योजना केवल दिखावा है. लोग तो फिर बटोर कर लकड़ी जलाएंगे या उपलों पर ही खाना बनाएंगे.

सरकार अब 6,000,000,000,000 रुपए (6,000 अरब रुपए) जमा करने को लग गई है : सरकारी कारखाने, जमीनें, कंपनियां बेच कर. मजेदार बात यह है कि बिक्री उसी धूमधाम से की जा रही है जिस धूमधाम से हमारे यहां घर के कमाऊ सदस्य के मरने के बाद 13 या 17 दिन बाद पंडेपुजारियों और समाज को खाना खिलाया जाता है. मरने वालों का अफसोस किसी को होता हो, बाकियों की तो बन ही आती है.

इस ब्रिकी से जनता का हक बहुत सी सेवाओं में से छीन लिया जाएगा. सस्ती रेलें, खुलेआम बाग, ऐतिहासिक धरोहरें, सड़कें, बसें, अस्पताल, सरकारी कारखाने बिक जाएंगे. जो खरीदेगा वह सब से पहले छंटनी करेगा. इन सरकारी सेवाओं और कंपनियों में बहुत से तो नेताओं के ही सगे चाचाभतीजे, साले लगे थे जो काम कुछ नहीं करते थे और उन के बेकार हो जाने का अफसोस नहीं है, पर उसी चक्कर में वे भी नप जाएंगे जिन्होंने मेहनत से नौकरी पाई और जिन्होंने नौकरी में 15-20 या ज्यादा साल गुजार दिए हैं और अब किसी नई जगह नौकरी करने लायक नहीं बचे.

देश में सरकारी और गैर सरकारी नियमित वेतन वाली नौकरियां भी बस 8 करोड़ हैं. इन 8 करोड़ में से भी कितनों का सफाया हो जाएगा, पता नहीं. बहुत सी निजी नौकरियां सरकारी मशीनरी पर ही टिकी हैं और जब वह सरकारी मशीनरी दूसरे हाथ में जाएगी तो उन के सप्लायर तो बदले ही जाएंगे. इन सप्लायरों के यहां काम करने वालों की नौकरियां भी समझ लें कि गईं.

नए मालिकों को तो मुनाफा कमाना है. उन के लिए जनता को सेवा देते रहना या काम चालू रखना कोई शर्त सरकार नहीं रख रही. जो लोग अच्छे दिनों के ढोल बजाबजा कर स्वागत कर रहे थे उन्हें अब एक और झटका अपनी ही सरकार का दिया लगेगा.

पर इस से फर्क नहीं पड़ता इस देश की जनता को. वह तो सदियों से इस तरह राजाओं की मनमानी सहती रही है. उसे आदत है कि हर आफत के लिए वह पिछले जन्म के कर्मों को दोष दे, सरकार को नहीं जिस की गलत नीतियों से नुकसान हुआ. ●

Divisa

सच्ची सहेली®

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक

कठिन दर्द

चिड़चिड़ापन

थकान

कमजोरी

कमर कटना

इम्यूनिटी

आदि में सहायक

New
सच्ची सहेली®
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
BRAND
67 जड़ी-बूटियों से बना,
महिलाओं के लिए भरोसेमंद आयुर्वेदिक टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli
Available at all medical & general stores

डा. प्रेमपाल सिंह वाल्यान

21वीं सदी का बड़ा मुद्दा है बढ़ता बांझपन

चाहे तनाव हो, मोटापा हो, वायु प्रदूषण हो या देर से शादी होना, कुछ भी वजह हो, पिछले तकरीबन 50 सालों में मर्दों के शुक्राणुओं की तादाद में 50 फीसदी तक की कमी पाई गई है. इस में बेऔलाद जोड़ों के लिए स्पर्म डोनेशन का एक नया रास्ता तैयार हुआ है.

'चाहिए 6 फुट लंबा, गोरा, गुड लुकिंग, अच्छे परिवार से, अच्छा पढ़ालिखा, आईआईटी/एमबीए, विदेशी यूनिवर्सिटी में पढ़ा, सेहतमंद व आकर्षक होना चाहिए...'

आप को यह एक शादी का इश्तिहार लगा होगा, लेकिन यह इस से हट कर स्पर्म डोनर यानी शुक्राणु दान करने वाले की खोज के लिए है. बेऔलाद जोड़े इस सूटेबल स्पर्म के लिए कुछ भी कीमत देने को तैयार रहते हैं.

"अस्पताल में आने वाले तकरीबन 40 फीसदी जोड़ों की स्पर्म डोनर से ऐसी ही मांग होती है, जबकि कुछ की कुछ खास मांगें भी होती हैं जैसे स्पर्म लंबे आदमी का होना चाहिए, क्योंकि वह जोड़ा चाहता है कि उस के बच्चे की लंबाई अमिताभ बच्चन जैसी होनी चाहिए.

"कुछ जोड़े आईआईटी पास का स्पर्म चाहते हैं, क्योंकि वे अपने परिवार में एक आइंस्टाइन चाहते हैं, जबकि नवजात के गुण उस के मातापिता के मिलेजुले रूप से होते हैं, जो बाद में विकसित होते हैं," यह कहना है डाक्टर अमिता शाह का, जो एक नामचीन आईवीएफ विशेषज्ञ हैं और कोलंबिया एशिया अस्पताल में प्रैक्टिस करती हैं.

ज्यादातर लोगों के दिमाग में यह घुसा हुआ है कि स्पर्म दान करना बहुत ही शर्मनाक बात है, लेकिन अब लोग धीरेधीरे इसे स्वीकार कर रहे हैं. बड़े कारोबारी, जो अपनी लक्जरी कार में स्पर्म दान के लिए आते हैं, के अलावा स्कूल व कालेज जाने वाले लड़के भी क्लिनिकों के हस्तमैथुन कमरे में अपनी मर्दानगी आजमाने आते हैं.

इंडियन काउंसिल औफ मैडिकल साइंस के नियमों के तहत स्पर्म दान करने वाले की उम्र 21 साल से 45 साल की उम्र के बीच की होनी चाहिए, इस के बावजूद बहुत से टीनेजर भी स्पर्म दान करते हैं. यहां केवल पैसा ही आकर्षण का केंद्र नहीं है, बल्कि स्कूली लड़के एक क्लिनिक के दान कक्ष में अपना सैक्स का जोश शांत करने के लिए भी जाते हैं, क्योंकि ज्यादातर फर्टिलिटी क्लिनिकों का लुक काफी जबरदस्त होता है.

ऐसा माहौल होता है 'स्पर्म दान कक्ष' का

नोएडा के मैक्स सैंटर ने तो मौडल क्लाडिया शिफर की मादक तसवीर लगाई हुई है, जिस से स्पर्म दान बढ़े. और भी बहुत से लोकल क्लिनिक हैं, जिन्होंने दान कक्ष को अच्छे से सजाया हुआ है. उदाहरण के तौर पर मयूर विहार, दिल्ली का ठकराल क्लिनिक है, जिस की दीवारों पर खूबसूरत महिलाओं की उत्तेजक तसवीरें लगी हैं और वे अपनी हथेलियों से अपने उभार दबा रही हैं. एक बार दान कक्ष में जाने के बाद आप खुद को नहीं रोक सकते.

ऐसा दान कक्ष छोटा व आरामदायक होता है. एक क्लिनिक के कमरे की दीवार पर लगे शीशे में नीली, गुलाबी बिकिनी पहने, चीनी मिट्टी से बनी मौडल मूर्तियां रखी थीं. इस के चारों तरफ की तसवीरों में भी औरतें नाममात्र के कपड़ों में थीं. कमरे के एक तरफ फोम के गद्दे वाला आरामदायक बिस्तर लगा था.

इस के पास की एक मेज पर एक विदेशी मैगजीन का ताजा अंक रखा हुआ था, बिकिनी विशेषांक था. दान करने वाले को जोश में लाने के लिए टैलीविजन व डीवीडी भी थीं, जिन पर उत्तेजक वीडियो देखी जा सकती थीं.

मैक्स सैंटर के एक मुलाजिम ने बताया कि

गलोइंग स्किन के लिए
प्राकृतिक नुस्ख़ा

आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।

New
Dr. Juneja's
Roop Mantra®
Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash

Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash

• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com

शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से निर्मित

आमतौर पर एक डोनर कक्ष में 5-15 मिनट का समय लेता है, पर हमेशा ऐसा नहीं होता कि एक परफैक्ट हैल्दी स्पर्म डोनर का वीर्य लिया ही जाए, क्योंकि अच्छी क्वालिटी के मानकों पर खरा उतरने के बाद ही उस के वीर्य को स्वीकार किया जाता है.

अभी हाल ही में एक औनलाइन इश्तिहार में चेन्नई के एक जोड़े ने साफतौर पर एक आईआईटी पास व खूबसूरत नौजवान के स्पर्म की मांग की थी, जिस के लिए वे लोग 50,000 रुपए प्रति मिलीलिटर तक देने को तैयार थे. उन की इस मांग ने इसे बहस का मुद्दा बना दिया है कि क्या सच में स्पर्म से नवजात का व्यवसाय और सामाजिक जिंदगी में जगह तय हो जाती है?

माहिरों का कहना है कि ऐसा बिलकुल नहीं है. ऐसा अनुरोध करना केवल हास्यास्पद है. लेकिन जोड़े ऐसा करते हैं, क्योंकि वे एक बेहतर वंशावली चाहते हैं.

कौंवैंट स्कूल से पढ़े दानदाताओं की सब से ज्यादा मांग है, क्योंकि आम सोच होती है कि दानकर्ता अच्छे समाज से है और वह वीर्य दान केवल पैसा कमाने के लिए नहीं करेगा.

मुंबई के डाक्टर अनीरधा मालपानी का कहना है कि यह केवल एक भरम है कि ऐसे दाताओं को सामान्य से ज्यादा मिलता है. कुछ क्लिनिकों व अस्पतालों का आरोप है कि हमारे 1,500-2,000 रुपए के भुगतान के अलावा भी जोड़े निजी तौर पर भी भुगतान करते हैं. कुछ जोड़े अपनी पेशकश औनलाइन पेश कर देते हैं.

मौलाना आजाद मैडिकल कालेज के छात्र रह चुके बालकृष्ण अय्यर ने बताया, "मैं ने छात्र जीवन में ही अपने स्पर्म दान किए थे. मैं हमेशा दूसरों की मदद करना चाहता था. मैं ने नागपुर के एक जोड़े को अपने स्पर्म दान किए थे. वे सरकारी महकमे में ऊंचे पद पर थे.

"वे लोगों की नजरों में नहीं आना चाहते थे. मैं ने उन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. उन्होंने मेरा हवाई यात्रा का खर्चा भी उठाया और शहर के अच्छे थ्रीस्टार होटल का भी सारा खर्चा उठाया, क्योंकि इस सब में मुझे एक हफ्ता लग गया था.

"मुझे स्पर्म दान करने के बदले 35,000 रुपए भी मिले थे. आज वह जोड़ा आगरा में 2 बच्चों के साथ रहता है. मुझे खुशी है कि मेरा स्पर्म किसी के काम आया."

इस सामाजिक काम को करने के लिए बालकृष्ण अय्यर जैसे कई लोग हैं, जिन्होंने ऐसा इंटरनैट के जरीए किया है. वैसे तो स्पर्म दाताओं में 56 फीसदी शहरी होते हैं, पर अब गांवदेहात से भी ऐसे लोग आगे बढ़ने लगे हैं.

लेकिन यह माध्यम कितना सुरक्षित है, इस पर सवालिया निशान लगा है. नकली सीमन एक बड़ा जुआ है, जिस के बारे में जोड़ों को ठीक से जागरूक होना चाहिए. इस के बारे में जोड़ों को जानकारी देने के लिए बहुत से पेशेवर संस्थान भी हैं. वे जोड़ों को सेहतमंद स्पर्म मुहैया कराते हैं व खतरा घटाते हैं.

लेकिन अभी भी 10 फीसदी बेऔलाद जोड़े ऐसे हैं, जो क्लिनिक में आने से शरमाते हैं. वे पारिवारिक डाक्टर के पास जाना पसंद करते हैं, जो प्रक्रिया को सुपरवाइज करता है. इस तरह के केसों में डाक्टरी जांच अधूरी होती है, जिस से डर बना रहता है.

डाक्टर कहते हैं कि यह अच्छी बात नहीं है, क्योंकि ज्यादातर जोड़े पढ़ेलिखे हैं और इस के लिए वे बहुतकुछ देते हैं. पर पिछले दशक से अब तक स्पर्म दाताओं के नजरिए में बहुत से बदलाव आ गए हैं, फिर भी लोगों की सोच में बहुत सी भ्रांतियां हैं.

2 दशक पहले जब हम ने मुंबई में पहला स्पर्म बैंक शुरू किया था, तो हम से पूछा जाता था कि हम सार्वजनिक रूप से इस शब्द का इस्तेमाल कैसे करेंगे. उस समय डोनर पाना भी मुश्किल था, क्योंकि 25 साल पहले मर्दों का कहना था कि वे सड़क पर अपने जैसों को घूमता नहीं देखना चाहते, पर आज हमारे क्लिनिक में रोजाना 8-9 डोनर खुद आते रहते हैं.

भारत की जानीमानी डाक्टर अंजलि मालपानी कहती हैं कि यह अलग बात है कि इन दानदाताओं में से 70 फीसदी को रिजैक्ट कर दिया जाता है, क्योंकि नियम बहुत सख्त हैं. हर हफ्ते क्लिनिक 500 शीशी सेहतमंद स्पर्म इकट्ठा करता है. हमें मुलुंड, नवी मुंबई व पश्चिमी उपनगर से भी काफी तादाद में नौजवान विद्यार्थी मिलते हैं, जो मामूली पैसों पर उपलब्ध हैं, लेकिन हम आईसीएमआर के शुक्रगुजार हैं कि उस ने डोनर के लिए निश्चित उम्र व मानक तय कर दिए हैं.

दिल्ली के डाक्टर अनूप गुप्ता मानते हैं कि हर फर्टिलिटी क्लिनिक में रोजाना स्पर्म डोनेशन के लिए 10-15 फोन आते हैं.

दक्षिण दिल्ली की थापर डायग्नोस्टिक लैब के डायरैक्टर सुनील थापर कहते हैं कि उन्हें स्कूली बच्चों से लगातार ईमेल रिक्वैस्ट मिलती रहती हैं. वे लिखते हैं कि स्पर्म दान के लिए वे पूरी तरह फिट हैं. पैसे के अलावा सैक्स के जोश के चलते भी वे अपना स्पर्म दान करना चाहते हैं.

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के नियमों के तहत डोनर की उम्र कम से कम 21 साल होनी चाहिए, लेकिन अकसर नियमों का पालन नहीं होता, जबकि नियमों के उल्लंघन पर फर्टिलिटी क्लिनिक का लाइसैंस रद्द होना व संचालकों को जेल भेजा जाना चाहिए.

डाक्टर अंजलि मालपानी का कहना है कि जब हम ने मुंबई में पहला स्पर्म बैंक खोला, तो एक मिलीलिटर वीर्य में आसानी से 40-60 मिलियन स्पर्म मिल जाते थे, लेकिन अब ये घट कर तकरीबन 45 फीसदी हो गया है.

प्रजनन प्रणाली के भारतीय गाइडलाइंस के सहायक डाक्टर पीएम भार्गव कहते हैं कि स्पर्म (शुक्राणुओं) के घटने को साल 1990 के बीच में पश्चिम में नोटिस किया गया. कुछ भारतीय डाक्टर भी मानते हैं कि भारतीय मर्दों में भी शुक्राणुओं की संख्या लगातार घट रही है.

पश्चिमी अध्ययन बताते हैं कि हर साल शुक्राणुओं की तादाद 2 फीसदी की दर से घट रही है. इस हिसाब से अगले 40-50 सालों में कोई भी मर्द उपजाऊ नहीं रहेगा.

हिंदी फिल्म 'विकी डोनर' के कलाकार आयुष्मान खुराना का कहना है कि जब आप स्पर्मदाताओं जैसे गंभीर मुद्दों पर फिल्म बनाते हैं, तो इस विषय की खोज करनी होती है.

यह बहुत ही नोबल काम था. अगर रक्तदान जीवन देता है, तो स्पर्मदान जीवन की आज्ञा देता है. शहरी मर्दों में शुक्राणुओं की संख्या बहुत कम हो गई है, जिस से स्पर्मदान आज की जरूरत है.

इसी फिल्म में आईवीएफ विशेषज्ञ की भूमिका निभाने वाले अन्नू कपूर का कहना है कि एक आम भारतीय सैक्स के बारे में बात क्यों नहीं करना चाहता? निजी तौर पर मुझे यह समझ नहीं आता कि भारत में लोग सैक्स और हस्तमैथुन को ले कर इतना हल्लागुल्ला क्यों करते हैं? यह एक सामान्य चीज है, जो जीवन देती है. मेरे लिए सैक्स पवित्र है. हम इसी से जनमे हैं. ●

स्पर्म दान के नियम

☛ स्पर्म बैंक में दाता एक खास समय तक स्पर्म दान करने का करार करता है. दान से 48 घंटे पहले तक उसे सैक्स या हस्तमैथुन नहीं करना होता.

☛ स्पर्म बैंक अकसर सैंपल का बैच चाहते हैं, जो 90 दिन तक द्रव नाइट्रोजन में रखा जाता है और उस के बाद स्पर्म की मृत्युदर, संक्रमण और बीमारी की जांच की जाती है.

☛ स्पर्म का इस्तेमाल 6 महीने के बाद होता है, जिस से अगर कोई बीमारी हो तो वह नजर आ जाए.

☛ हर दान के लिए दाता को तकरीबन 1,000-2,000 रुपए तक दिए जाते हैं. वह 40,000 रुपए तक कमा सकता है.

☛ निजी कक्ष में हस्तमैथुन द्वारा कोई अपने स्पर्म बैंक को दान करता है.

आईसीएमआर के दिशानिर्देश

ICMR
INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH
Serving the nation since 1911

☛ पति या पत्नी के रिश्तेदार, जानकार या दोस्त का दान किया गया स्पर्म नहीं होगा.

☛ यह एआरटी क्लिनिक की जिम्मेदारी होगी कि स्पर्म सही बैंक से हो न तो जोड़े, न ही क्लिनिक किसी को भी दाता की पहचान का हक नहीं होगा.

☛ जोड़े व क्लिनिक दोनों को ही दाता के वजन, लंबाई, रंग, कारोबार, बीमारी, एथनिक औरिजिन व डीएनए फिंगर प्रिंट की जानकारी का हक होगा.

☛ यह क्लिनिक व सीमन बैंक की जिम्मेदारी होगी कि जोड़े को दाता की पहचान न हो.

☛ एआरटी क्लिनिक जोड़े को सीमन का चार्ज कर सकता है.

☛ दाता की उम्र 21 साल से 45 साल होनी चाहिए.

यूनाईटेड®
प्रेशर कुकर

देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...

WARRANTY 60 MONTHS
यूनिरॉइज़™
यूनाईटेड® प्रेशर कुकर
orignal 5 लि
सर्वोच्च
United®
UNITED PRESSURE COOKER
IS : 2347
CMIL-3294967

United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

जब होटल रेड में पकड़े जाएं

रोहित

एक होटल के रिसैप्शन के काउंटर की ओर एक लड़का आगे बढ़ता है. लड़की उस के साथ जाने में थोड़ी असहज होती है. वह घबराई हुई है. यह पहली बार है, जब वह अपने बौयफ्रैंड के साथ इतनी दूर अकेली आई है.

यह उन दोनों के लिए वैलेंटाइन डे का खास दिन है. यह दिन उन्होंने अपने जवान जज्बातों की प्यास बुझाने के लिए चुना था. वे पूरी तरह से एकदूसरे के जिस्म में खो जाना चाहते थे. घर से दूर किसी होटल में ठहरना उन के लिए सुरक्षित था, इसलिए वे इस होटल में आए थे.

वे दोनों होटल के कमरे में घुसते हैं. लड़का लाइट जलाता है. यह पहली बार है, जब उन दोनों को इतना एकांत मिला है, जहां समाज की तिरछी निगाहें उन्हें नोटिस नहीं कर सकतीं.

वे दोनों एकदूसरे के करीब बढ़ते हैं. शुरुआत घबरा कर छूने से होती है, फिर धीरेधीरे चुंबन और फिर गले लगते हुए बिस्तर में वे एकदूसरे से लिपट जाते हैं, फिर उन की सिसकियां उन्हें और भी मदहोश करती हैं और वे एकदूसरे में पूरी गहराई से डूब जाते हैं.

तभी दरवाजे से गुस्सैल आवाज आती है, "क्या पंचायत चल रही है यहां... दरवाजा खोलो..." यह आवाज और भी कड़क होती जाती है, "खोलो दरवाजा... खोलो... तोड़ दो दरवाजा..."

लड़का घबरा कर झट से उठता है. वह अपने कपड़े ढूंढ़ता है, लड़की सहमी सी एक चादर को अपने बदन पर ओढ़ लेती है.

वे दोनों संभल पाते, इस से पहले दरवाजा टूटता है और 4 पुलिस वाले कमरे के भीतर घुस जाते हैं.

"क्या भसड़ मचा रखी है यहां, पूरा बाजार बना दिया है..." एक पुलिस वाला गुस्से से कहता है.

महिला कांस्टेबल झट से लड़की के बाल पकड़ लेती है और सीनियर पुलिस वीडियो बनाने लगता है.

"नाम बोल... नाम..." इंस्पैक्टर लड़की पर जोर से चिल्लाता है.

लड़की डरीसहमी चुप रहती है. इतने में महिला कांस्टेबल उस के बाल जोर से खींच कर नाम बताने को कहती है.

"देवी..." लड़की आखिरकार अपना नाम कहती है.

"तो देवी, तुम्हारी जिंदगी तो अब कंडम हो गई... कहां से आई है? मड़वाड़ी से या नेपाल से?"

"नहीं सर, आप गलत समझ रहे हैं..." देवी कहती है और रोने लगती है. उसे लगने लगा है कि अब सिर्फ बदनामी उस के आगे खड़ी है.

इस के आगे बताने की जरूरत नहीं कि पुलिस ने देवी और उस के परिवार को किस तरह ब्लैकमेल किया होगा.

साल 2015 में डायरैक्टर नीरज घेवाण की फिल्म 'मसान' में यह सारा घटनाक्रम शुरुआती 7 मिनट में घटता है. फिल्म कुछकुछ हकीकत के नजदीक दिखाई देती है.

आज के दौर में सभी अनब्याहे जोड़े अपनेअपने पार्टनर के साथ एकांत में समय बिताना चाहते हैं. इस के लिए उन्हें होटल ऐसी बेहतर जगह दिखाई देती है, जहां कोई पहचान का न हो और प्राइवेसी भी मिल जाए, पर वे इसे रिस्की भी मानते हैं. इस की वजह है पुलिस की जबतब पड़ने वाली रेड और इस से होने वाली बदनामी.

ऐसे जोड़े इस बात को ले कर काफी डरे रहते हैं कि होटल में ठहरने के दौरान अगर वहां पुलिस आ धमकती है तो वे क्या करेंगे? वे कैसे इस मामले से निबटेंगे? अगर बात घरपरिवार तक चली गई तो क्या होगा या वे पुलिस द्वारा ब्लैकमेल का शिकार तो नहीं हो जाएंगे?

खबरों में भी इस तरह की घटनाएं सामने आती हैं, जहां कुंआरे जोड़े पुलिस रेड के दौरान पकड़े जाते हैं और फिर किन्हीं दिक्कतों के चलते उन्हें थाने में लंबा समय बिताना पड़ जाता है. इस दौरान जिन चीजों से बचने के लिए वे होटल आए थे, वे चीजें सामने मुसीबत की तरह आ खड़ी होती हैं यानी बात घर तक पहुंच ही जाती है.

30 अगस्त को उत्तर प्रदेश के औरैया जिले में भगवतीगंज शहर के एक होटल में पुलिस ने छापेमारी कर 3 कुंआरे जोड़ों को पकड़ा था. उन जोड़ों का जुर्म था कि वे अपने लिए थोड़ी प्राइवेसी चाहते थे. पुलिस उन्हें पकड़ कर थाने ले गई. पूछताछ के बाद लड़कियों को हिदायत दे कर उन के परिवार वालों के सुपुर्द कर लड़कों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर दी गई.

इसी तरह इस साल फरवरी महीने में आगरा के होटल एआर पैलेस में 9 प्रेमी जोड़ों को पुलिस ने रेड के दौरान पकड़ा. उन में कुछ छात्राएं थीं, जो अपने प्रेमियों के साथ होटल आई थीं. इन का भी यही गुनाह था कि वे अपने प्रेमियों के साथ समय बिताने आई थीं, खुल कर कहें तो सैक्स करने आई थीं. उन लड़कियों के भी परिवार वालों को थाने बुलाया गया और फिर उन के सुपुर्द किया गया.

पकड़े जाने वाले इन ज्यादातर मामलों में जो सब से बड़ी दिक्कत होती है वह यह कि ऐसे जोड़े अपनी पहचान छिपा कर या पहचान नहीं बता कर कमरा लेते हैं. बहुत से बिना रजिस्टर्ड वाले होटलों में कमरे किराए पर लेते हैं, जिस वजह से उन्हें पुलिस स्टेशन जाने की नौबत आ जाती है या धरपकड़ में वे भी धरे जाते हैं.

भारत में शादी से पहले सैक्स करना एक तरह का पाप माना जाता है. शादी से पहले सैक्स करना घर, समाज, शासन और प्रशासन के लिए इतनी बड़ी बात बन जाती है कि इस का पता चलते ही सब की जिंदगी में मानो भूचाल आ जाता है. समाज से ले कर पुलिस प्रशासन तक इसे अनैतिक मानता है, जिस का खमियाजा प्रेमी जोड़ों को भुगतना पड़ जाता है.

हालांकि, पिछले कुछ दशकों से भारत एक देश और एक समाज के रूप में तेजी से आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहा है, पर एक बात जो अभी भी जस की तस है वह यह कि प्यार में क्या करें व क्या न करें वाले सवाल अभी भी समाज के तथाकथित रखवालों द्वारा बनाई गई सीमाओं में ही बंधे हुए हैं.

ये वे सीमाएं हैं, जो हम ने सदियों से बनाई हैं. हाथ में हाथ डाल कर चलने वाले प्रेमी जोड़े या पार्कों में दिखने वाले जोड़े सोसाइटी को बेहद ही असहज दिखाई देते हैं. वहीं प्राइवेसी की तलाश करने के लिए अगर कोई प्रेमी जोड़ा कुछ घंटों के लिए होटल का कमरा बुक करता है, तो उसे हिकारत से देखा जाता है.

यहां तक कि सरकारी मशीनरी, जिसे इन मौकों पर समझदारी से काम लेने की जरूरत है वह भी इन का शोषण करने वालों में शामिल होती है. यहां तक कि यह सारी सिचुएशन एक जोड़े को एहसास दिलाती है कि समाज के नजरिए से एक

कुंआरे जोड़े का साथ रहना या कहीं पकड़े जाना बेहद गलत और अनैतिक है.

आज हम ऐसे जोड़ों के लिए एक बेहद जरूरी जानकारी ले कर आए हैं, जो अपने पार्टनर के साथ होटलों में जाने की इच्छा तो रखते हैं, पर वहां जाने से कतराते हैं.

पहली बात, कुंआरे जोड़ों द्वारा कमरा किराए पर लेना भारत में अपराध नहीं है. साल 2019 के दिसंबर महीने में मद्रास हाईकोर्ट ने फैसला सुनाया था कि होटल के कमरे में रहने वाले कुंआरे जोड़े को अपराधी नहीं माना जाएगा. हाईकोर्ट ने इसे इस बात के संदर्भ में देखा कि 2 बालिगों के लिवइन रिलेशनशिप को अपराध नहीं माना जाता है तो ऐसे में होटल में रूम शेयर करने को कैसे अपराध माना जा सकता है?

यह फैसला कोयंबटूर के एक होटल को सील किए जाने के बाद आया था, जब एक कुंआरे जोड़े को उसी के एक कमरे में पाया गया था.

इस का मतलब यह है कि पुलिस के पास होटल जैसी निजी संपत्ति पर छापा मारने का अधिकार तो है, पर उन के पास एक कुंआरे जोड़े को इस आधार पर गिरफ्तार करने का हक नहीं है.

सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट विनय कुमार गर्ग का कहना है कि कुंआरे जोड़े को एकसाथ होटल में रहने और आपसी रजामंदी से शारीरिक संबंध बनाने का मौलिक अधिकार है. हालांकि इस के लिए दोनों का बालिग होना जरूरी है.

इस बारे में सुप्रीम कोर्ट साफ कह चुका है कि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत मिले मौलिक अधिकार से अपनी मरजी से किसी के साथ रहने और शारीरिक संबंध बनाने का अधिकार आता है. इस के लिए शादी के बंधन में बंधना जरूरी नहीं है.

इस का एक मतलब यह हुआ कि अगर कोई बालिग जोड़ा बिना शादी किए होटल में एकसाथ रहता है, तो यह अपराध में नहीं आता.

एडवोकेट विनय कुमार गर्ग का कहना है कि होटल में ठहरने के दौरान कुंआरे जोड़े को अगर पुलिस परेशान या गिरफ्तार करती है, तो पुलिस की इस कार्यवाही के खिलाफ ऐसा जोड़ा संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत सीधे सुप्रीम कोर्ट और अनुच्छेद 226 के तहत सीधे हाईकोर्ट जा सकता है.

आमतौर पर पुलिस ऐसे मामलों में होटल में देह धंधे के शक के चलते रेड करती है. चूंकि भारत में देह धंधा अपराध है, तो यह करना पड़ता है. पर ऐसे में अगर पुलिस किसी कुंआरे जोड़े के कमरे में आती है तो ऐसे हालात में वे अपने साथ आईडी प्रूफ जरूर रखें, ताकि पहचान हो सके और नौबत पुलिस स्टेशन जाने की न आ जाए.

घबराए नहीं, क्योंकि आप कोई जुर्म नहीं कर रहे हैं. पुलिस अगर होटल में रेड मारती है तो उसे अपना काम करने दें, क्योंकि उन पर अपराधियों को पकड़ने की जिम्मेदारी होती है. पर उस के बावजूद भी अगर पुलिस ब्लैकमेल करती हो तो बेहिचक संबंधित पुलिस वाले के खिलाफ शिकायत कर सकते हैं.

होटल में रूम लेने से पहले सारी सावधानियां बरतें. कानूनी तरीके से या होटल के नियमों के हिसाब से होटल में जाएं. ●

होटल रूम ऐसे बुक करें

भारत में कुंआरे जोड़ों के लिए ऐसे कई होटल हैं, जो बिना किसी परेशानी के उन्हें कमरे किराए पर देते हैं. आजकल औनलाइन होटल बुकिंग के कई सेफ तरीके आ चुके हैं. होटल के खुद के पोर्टलों से होटल बुकिंग आसान हो गई है. जब आप औनलाइन होटल का कमरा बुक करते हैं, तो प्रीबुक औप्शन चुन सकते हैं. ये पोर्टल आप को बिना असहज सवालों के बुकिंग एक्सैप्ट कर लेता है.

होटल बुक करने से पहले उस नीतियों को ध्यान से पढ़ें, क्योंकि कुछ होटल कुंआरे जोड़ों को कमरा बुक करने की इजाजत नहीं देते हैं. यह आप को होटल का चयन करते समय सतर्क रहने में मदद करेगा.

घबराएं नहीं. खुद पर यकीन रखें. आप कोई गैरकानूनी काम नहीं कर रहे हैं. होटल का कमरा बुक करते समय डरें नहीं.

अपना आईडी कार्ड अपने साथ रखें. आप से चैकइन के समय केवल एक वैलिड सरकारी आईडी कार्ड होटल के मुलाजिम द्वारा मांगी जाती है. मुमकिन है कि वे लोग आईडी की स्कैन की हुई कौपी अपने पास रखेंगे और आप को ओरिजिनल डौक्युमैंट वापस कर देंगे.

ऐसा कोई कानून नहीं है, जिस में कहा गया हो कि कुंआरे जोड़े होटल का कमरा बुक नहीं कर सकते हैं. पर आप और आप के साथी की उम्र 18 साल से कम है, तो आप भारत में होटल का कमरा बुक नहीं कर सकते हैं.

Dhanwantri
Divine-9

क्या आपके साथ ऐसा तो नही ?

★ जल्दी-जल्दी जुकाम या गला खराब होता है ★ शरीर में कमजोरी बनी रहती है या वजन घट रहा हो
★ एलर्जी, बुखार और इन्फैक्शन शीघ्र होता हो ★ जल्दी-जल्दी पेट खराब होता हो।

ये सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण हो सकते हैं।

Divine-9™
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

एक आयुर्वेदिक औषधि है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने में सहायक है, सोचना आपको है कि रोगों से लड़ना है या रोगों से घिरे रहना है।

मिलिए मेरी नई फैमिली से
जो रहे फिट हमेशा।

2007 से ही अश्वगंधा, गिलोय व तुलसी औषधि Divine-9 में पहले से ही मौजूद है।

सन् 1921 से हमारे प्रसिद्ध अन्य उत्पाद सुन्दरी सुधा, स्वर्ण मधु, पाचन अमृत सुधा।

वितरक रहित क्षेत्रों में वितरक बनने हेतु सम्पर्क करें - 09258040152, 05921250052

निर्माता: धन्वंतरि फार्मास्युटिकल, काशीपुर (उत्तराखण्ड) मो0 : 07618570252, 09412245652

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

हेल्पलाइन नं. 9358256552

रोहतक चौहरा हत्याकांड

बदनामी, भय और भड़ास का नतीजा

सुनील शर्मा

फरवरी, 2021 को रोहतक के जाट कालेज अखाड़े में रात के तकरीबन सवा 8 बजे कुश्ती के कोच सुखविंदर ने अंधाधुंध फायरिंग कर 5 लोगों की हत्या कर दी थी. मरने वालों में जाट कालेज के कोच मनोज, रेलवे में काम कर रही उन की पत्नी साक्षी, उत्तर प्रदेश की पहलवान पूजा समेत 2 और कोच शामिल थे.

इस वारदात से 5 दिन पहले ही पूजा ने कोच मनोज को बताया था कि सुखविंदर उसे परेशान कर रहा है और शादी के लिए दबाव बना रहा है.

यह सुन कर कोच मनोज ने सुखविंदर की अखाड़े में आने से रोक लगा दी थी. इसी बात की रंजिश के चलते सुखविंदर ने यह घिनौना कदम उठाया था. हालांकि वह बाद में पकड़ा गया था.

इस बात को 7 महीने भी नहीं हुए थे कि विजय नगर कालोनी, रोहतक में ही एक चौहरे हत्याकांड ने नई सुर्खियां बना दीं. 27 अगस्त, 2021 को दिनदहाड़े घर में घुस कर 3 लोगों की हत्या कर दी गई, वहीं एक 17 साल की लड़की इस फायरिंग में घायल हुई, जिस ने वारदात के 40 घंटे बाद अस्पताल में दम तोड़ दिया.

पुलिस को मिली पहली जानकारी के मुताबिक, अज्ञात हथियारबंद बदमाशों ने घर में घुस कर परिवार के 4 सदस्यों पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसाईं, जिस के चलते 45 साल के प्रदीप उर्फ बबलू पहलवान, उन की 40 साल की पत्नी बबली और 60 साल की सास रोशनी की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि प्रदीप की 17 साल की बेटी तमन्ना ने बाद में अस्पताल में दम तोड़ा.

प्रदीप उर्फ बबलू पहलवान और उस की सास रोशनी से हत्यारा सब से ज्यादा गहरी रंजिश रखता था, क्योंकि उस ने बबलू पहलवान को 3 और सास रोशनी को 2 गोलियां मारी थीं.

पुलिस के पास जो पोस्टमार्टम रिपोर्ट पहुंची, उस में सामने आया कि बबलू पहलवान को माथे में पहली गोली मारने के बाद हत्यारे ने सटा कर उसी जगह 2 गोलियां और मारीं, वहीं सास रोशनी को भी पौइंट ब्लैंक रेंज से पहली गोली मारने के बाद दूसरी गोली भी सिर में पिस्टल सटा कर मारी गई.

अभिषेक उर्फ मोनू ही धरा गया

इस हंसतेखेलते परिवार में 20 साल का एकलौता अभिषेक उर्फ मोनू ही बचा, जो बबलू पहलवान का बेटा था और वारदात के समय घर पर नहीं था. बाद में उसी ने घर आ कर यह खूनखराबा देखा था और पड़ोसियों को जमा किया था.

हुआ सनसनीखेज खुलासा

पुलिस इस हत्याकांड की पेचीदगी में उलझ गई थी. कभी इस बात का शक होता कि क्योंकि बबलू पहलवान दबंग था और प्रोपर्टी डीलर था, लिहाजा किसी ने उस से दुश्मनी निकाली होगी. पर हर एंगल से जांच करने के बाद पुलिस ने हैरतअंगेज तरीके से अभिषेक उर्फ मोनू को गिरफ्तार कर लिया.

पुलिस के मुताबिक, अभिषेक उर्फ मोनू अपनी बहन तमन्ना के नाम प्रोपर्टी करवाने से नाराज था. ऐसा नहीं था कि प्रदीप उर्फ बबलू पहलवान अभिषेक से प्यार नहीं करता था.

लोगों की मानें, तो उस ने अपने बेटे अभिषेक को हौंडा सिटी कार व सवा लाख रुपए का एप्पल का फोन तक दे रखा था. उसे दिल्ली में एयरलाइंस में क्रू मैंबर का कोर्स करवाया था. साथ ही, शहर के एक कालेज में दाखिला दिलवाया था. यहां तक कि एक निजी एयरलाइंस में नौकरी के लिए भी बातचीत की थी और उसे विदेश भेजने के लिए तैयार हो गया था.

बाद में पुलिस को पता चला कि अभिषेक कई दिन से अपने पिता से 5 लाख रुपए मांग रहा था, पर जब पिता ने वजह पूछी तो उस ने संतोषजनक जवाब नहीं दिया और जब परिवार को उस वजह की भनक लगी, तो अभिषेक की तुड़ाई कर दी गई.

दरअसल, पुलिस पूछताछ में अभिषेक उर्फ मोनू ने खुलासा किया कि वह सैक्स सर्जरी के जरीए अपना जैंडर बदलवाना चाहता था यानी लड़के से लड़की बनना चाहता था. वह पिछले एक साल से सर्जरी के लिए इंटरनैट पर इस तरह के क्लिनिक की जानकारी जुटा रहा था.

यही नहीं, वह ऐसा कर के उत्तराखंड के एक दोस्त के साथ विदेश भागना चाहता था. इस दोस्त से अभिषेक की मुलाकात क्रू मैंबर का कोर्स करने के दौरान हुई थी.

पुलिस के मुताबिक, अभिषेक उर्फ मोनू अपने इस काम को अंजाम दे पाता, उस से पहले परिवार को इस बात का पता चला तो उसे जम कर पीटा गया. इस से गुस्सा हो कर उस ने यह वारदात कर डाली.

पुलिस के मुताबिक, अभिषेक उर्फ मोनू ने बड़े ही शातिर तरीके से इस वारदात को अंजाम दिया. अपना परिवार खत्म करने के बाद वह छत के रास्ते से फरार हुआ और एक होटल में जा छिपा, जहां उस का वही उत्तराखंड का तथाकथित दोस्त था, जिस के लिए वह अपना सैक्स बदलवा कर लड़की बनना चाहता था.

वहां उन दोनों ने जिस्मानी रिश्ता बनाया और फिर एक घंटे के बाद अभिषेक दोबारा घर गया और इस हत्याकांड का पहला चश्मदीद गवाह बनते हुए पड़ोसियों को जमा कर लिया.

पुलिस रिमांड में जब कुछ मनोवैज्ञानिक अभिषेक उर्फ मोनू से मिले, तो वह सामान्य बना रहा और एक तरह से उन्हें भी उलझा दिया. बाद में वकील मोहित वर्मा ने शनिवार, 11 सितंबर, 2021 को सुनारिया जेल में जा कर उस से तकरीबन 12 मिनट तक बातचीत की तो अभिषेक ने खुद को बेकुसूर बताया.

अभिषेक उर्फ मोनू ने यह भी बताया कि पुलिस ने उसे बिना वजह फंसाया है. उस से काफी दस्तावेजों पर दस्तखत भी कराए गए हैं. उस का इस हत्याकांड से कोई मतलब नहीं है. उस ने सीबीआई जांच की भी मांग की.

अभिषेक उर्फ मोनू अपने बचाव में दलील रखने का हकदार है, पर खुद को बेकुसूर कहने भर से वह इस हत्याकांड से पीछा नहीं छुड़ा सकता. वैसे, वह ऐसे परिवार और समाज से आता है, जहां किसी लड़के का लड़की बन कर जीने की सोच रखना ही सब से बड़ी सजा है.

जिस हरियाणा में दूसरी जाति में शादी करने से ओनर किलिंग हो जाती है, वहां प्रदीप उर्फ बबलू पहलवान कैसे सहन कर सकता था कि उस का लाड़ला बेटा ऐसी शर्मनाक डिमांड उस के सामने रख दे.

अभिषेक उर्फ मोनू को पता था कि आज यह बात बताने पर उस की पिटाई हुई है, तो कल को समाज में अपनी इज्जत की खातिर बाप ही उस की बलि चढ़ा सकता है.

हो सकता है कि उस के उत्तराखंड वाले दोस्त ने उसे यह राह दिखाई हो, पर उम्र के जिस पड़ाव पर अभिषेक था, उसे खुद का वजूद बचाने के लिए यही एक रास्ता समझ आया हो.

जिस तरह से अभिषेक उर्फ मोनू ने क्राइम सीन पर पुलिस के सामने सबकुछ उगल कर यह हत्याकांड कबूल किया है, उस से शक की कोई गुंजाइश नहीं बचती है, बशर्ते इस वारदात में जमीनजायदाद से जुड़े पारिवारिक झगड़े का कोई दूसरा पेंच न फंसता हो. ●

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO. 1 BRAND INDIA 2014

Consumer Survey Report, MRG 2014

Helpful
in Painful
Conditions
Dr. Ortho™
Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

ज्योतिष्मती तेल

जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल

जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल

नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल

जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल

पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

कपूर तेल

विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल

जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

तिल तेल

मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

क्रिकेट :

बिना खेले ही कर दिया खेल

सुनील शर्मा

18 साल के लंबे अरसे बाद पाकिस्तान गई न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम और मेजबान टीम के बीच 17 सितंबर, 2021 से 3 मैचों की वनडे सीरीज का पहला मैच खेला जाना था, लेकिन मैच शुरू होने से ठीक पहले सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान का दौरा रद्द कर दिया. इस दौरे पर न्यूजीलैंड को 5 मैचों की टी20 सीरीज भी खेलनी थी.

न्यूजीलैंड क्रिकेट के मुख्य कार्यकारी डेविड व्हाइट ने इस सिलसिले में कहा कि उन्हें सुरक्षा को ले कर जो सलाह मिल रही थी, उसे देखते हुए दौरे को जारी रखना मुमकिन नहीं था. उन्होंने कहा, "मैं समझता हूं कि यह पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के लिए एक झटका होगा, जो शानदार मेजबान रहा है. लेकिन खिलाड़ियों की सुरक्षा सब से ऊपर है और हमारा मानना है कि यह एकमात्र जिम्मेदार औप्शन है."

न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड ने अपने आधिकारिक बयान में कहा कि 5 मैचों की टी20 सीरीज के लिए लाहौर जाने से पहले 17 सितंबर, 2021 से हमें पाकिस्तान के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज खेलनी थी. हालांकि, न्यूजीलैंड सरकार की तरफ से हमें पाकिस्तान में खतरे की जानकारी मिली, तो इस के बाद हम ने सुरक्षा सलाहकारों की सलाह के बाद यह फैसला लिया है कि कीवी टीम इस दौरे को जारी नहीं रखेगी.

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, जब सुरक्षा कारणों से पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड शर्मसार हुआ है.

गौरतलब है कि पाकिस्तान में साल 2009 में लाहौर के गद्दाफी क्रिकेट स्टेडियम के पास आतंकवादियों ने श्रीलंका की टीम बस पर हमला किया था. इस घटना में श्रीलंका के 6 क्रिकेटर घायल हो गए थे, जबकि पाकिस्तान के 6 पुलिस वाले और 2 नागरिक मारे गए थे.

3 मार्च, 2009 को गद्दाफी स्टेडियम के पास 2 गाड़ियों से तकरीबन 12 आतंकवादी पहुंचे थे और उन्होंने सरेआम गोलियां बरसानी शुरू कर दी थीं. इन आतंकियों ने राकेट और हैंड ग्रेनेड से भी हमला करना चाहा था, लेकिन पुलिस वालों ने मुस्तैदी दिखाते हुए उन के मनसूबों पर पानी फेर दिया था.

उस समय हुए हमले में 6 श्रीलंकाई क्रिकेटर घायल हुए थे और 2 सपोर्ट स्टाफ को गंभीर चोटें आई थीं. एक रिजर्व अंपायर भी हमले में घायल हो गए थे. एक गोली तो तब के कप्तान महेला जयवर्धने के टखने को छूते हुए निकली थी. तब के विकेटकीपर बल्लेबाज कुमार संगकारा के कंधे पर भी एक छर्रा लगा था और थिलन समरवीरा के भी पैर में गोली लगी थी. सब से गंभीर चोट थरंगा परनाविथाना के सीने पर लगी थी.

इस हमले ने दुनियाभर में पाकिस्तान की इमेज खराब कर दी थी. श्रीलंकाई क्रिकेट टीम ने तुरंत घर वापस लौटने का फैसला किया था. मैदान पर सेना का हैलीकौप्टर उतारा गया था.

इस तरह की बातें पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड और खिलाड़ियों के लिए बड़ी नुकसानदेह हैं. वे बेवजह कठघरे में खड़े हो जाते हैं. इस से उन्हें पैसे और खेल का नुकसान होता है. अफगानिस्तान में हुए हालिया बदलाव और उस में पाकिस्तान की दखल के चलते विदेशी खिलाड़ी वहां दौरा करने से बच रहे हैं. न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के बीच टौस होने से पहले ही यह फैसला लिया गया कि अब यह दौरा नहीं होगा.

इस मसले पर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान, जो खुद पाकिस्तान क्रिकेट टीम के कप्तान और बेहतरीन आलराउंडर रह चुके हैं, ने भी न्यूजीलैंड की प्रधानमंत्री जैसिंडा अर्डर्न से बातचीत कर मेहमान टीम और खिलाड़ियों की सुरक्षा को ले कर अपनी ओर से पूरा आश्वासन दिया था, लेकिन इस के बावजूद उन्हें निराशा ही हाथ लगी.

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष रमीज राजा ने तो न्यूजीलैंड पर भड़कते हुए कहा, 'पागलपन से भरा दिन. फैंस और अपने प्लेयर्स के लिए बहुत पछतावा हो रहा है. सुरक्षा की दृष्टि से खतरे के आधार पर एकतरफा फैसला ले कर एक टूर से अलग होगा बेहद फ्रस्ट्रेट करने वाला है. खासतौर से तब जब इसे शेयर न किया जाए. न्यूजीलैंड किस दुनिया में रह रहा है? न्यूजीलैंड से तो हम आईसीसी में मिलेंगे.'

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के कप्तान बाबर आजम ने ट्वीट कर कहा, 'सीरीज के इस तरह अचानक रद्द होने से बेहद निराश हूं, क्योंकि इस से करोड़ों पाकिस्तानी क्रिकेट फैंस के चेहरों पर मुसकराहट आ सकती थी. मुझे अपनी सुरक्षा एजेंसियों की काबिलीयत व विश्वसनीयता पर पूरा यकीन है. वे हमारा गौरव हैं और रहेंगी. पाकिस्तान जिंदाबाद.'

पाकिस्तानी तेज गेंदबाज रह चुके शोएब अख्तर ने तो न्यूजीलैंड पर पाकिस्तानी क्रिकेट की हत्या का दोष मढ़ दिया. उन्होंने ट्वीट किया, 'न्यूजीलैंड ने पाकिस्तानी क्रिकेट की हत्या कर दी है.'

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के आलराउंडर रह चुके शाहिद अफरीदी ने तो सुरक्षा चेतावनी को ही कोरी अफवाह बताते हुए न्यूजीलैंड क्रिकेट पर अपनी भड़ास निकाली. उन्होंने ट्वीट किया, 'एक फर्जी खतरे पर आप ने पूरा दौरा ही रद्द कर दिया, जबकि आप को पूरा भरोसा दिलाया गया था. न्यूजीलैंड क्रिकेट, क्या आप को अपने इस फैसले से होने वाले असर की समझ है?'

न्यूजीलैंड के इस फैसले से पाकिस्तान में होने वाले अगले दौरों पर खतरे के बादल मंडराते दिखे. पाकिस्तान को इंगलैंड की महिला और पुरुष क्रिकेट टीमों की मेजबानी करनी थी. तकरीबन 16 साल के बाद इंगलैंड की टीम टी20 सीरीज खेलने के लिए पाकिस्तान दौरे पर जाने के लिए तैयार हुई थी, जो टी20 वर्ल्ड कप से ठीक पहले होना था. लेकिन अब इंगलैंड ने भी बहाना बना कर इस दौरे से हाथ जोड़ लिए.

इतना ही नहीं, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड उम्मीद लगाए थी कि जो आस्ट्रेलियाई टीम पिछले 24 साल से पाकिस्तान की धरती पर मैच खेलने नहीं आई है, वह अगले साल फरवरीमार्च महीने में होने वाले टैस्ट, वनडे और टी20 सीरीज के लिए मान जाएगी, पर अब सब गुड़गोबर होता नजर आ रहा है.

इस सब में उन करोड़ों क्रिकेट चहेतों का भी नुकसान हुआ है, जो इस सीरीज को ले कर बहुत जोश में थे. उन में से बहुत से तो क्रिकेट पर जुआ खेलते हैं और पैसा बनाते हैं या गंवा देते हैं. साथ ही, बुकी भी बहुत निराश होंगे, जो कहीं भी बैठ कर किसी भी देश में चल रही क्रिकेट सीरीज पर सट्टा खेलवाते हैं.

अगर पाकिस्तान की ही बात की जाए, तो जुलाई, 2021 में पाकिस्तान और इंगलैंड के बीच हुए एक क्रिकेट वनडे मैच पर भारत के सिरसा के ऐलनाबाद के वार्ड नंबर 3 में 2 जगहों पर छापा मार कर क्रिकेट बुकीज का भंडाफोड़ किया था और 12 लोग पकड़े थे.

बहुत से नौजवान तो बिना किसी बुकी या सट्टेबाज की मदद से अपने दोस्तों के साथ ही क्रिकेट पर जुआ खेलते हैं. नाम न बताने की शर्त पर एक लड़के ने कहा, "क्रिकेट की हर गेंद पर जुआ खेला जा सकता है. गेंद क्या, टौस पर भी पैसा लगाया जा सकता है कि कौन जीतेगा. कौन सा बल्लेबाज मैच में कितने रन बनाएगा, इस पर भी बाजी खेली जा सकती है.

"मान लो कि आप और मैं क्रिकेट पर जुआ खेलना चाहते हैं, तो आप अपनी पसंद के 3 बल्लेबाज चुन लें और मैं भी चुन लूंगा. शर्त यह होगी कि वे कुल कितने रन बनाएंगे. बस, उन बल्लेबाजों के बनाए गए रनों के अंतर पर पैसा लगा होगा, जो हर रन पर कितना भी हो सकता है, जैसे हर रन पर 10 रुपए, 100 रुपए या फिर आप जितना चाहें..."

न्यूजीलैंड के इस फैसले से बहुतों का नुकसान हुआ है, फिर चाहे वे खिलाड़ी हों, दर्शक हों या फिर पैसा लगाने वाले जुआरी ही क्यों न हों. अब देखते हैं कि रमीज राजा न्यूजीलैंड को इंटरनैशनल क्रिकेट काउंसिल के सामने कैसे देखेंगे और उस का क्या नतीजा सामने आएगा. ●

ताकत और इम्युनिटी बढ़ाने में मददगार

बैद्यनाथ

असली आयुर्वेद

शिलाजीत

गोल्ड कैप्सूल

बैद्यनाथ शिलाजीत गोल्ड प्रसिद्ध पौरुषशक्ति व स्फूर्तिवर्द्धक औषधियों का अनोखा योग है जो प्रभावशाली शक्ति व उत्साह वर्द्धक है। यह मूत्र नली के संक्रमण, प्रोस्टेट की समस्याओं को दूर कर मूत्रवह तंत्र को भी पुष्ट करने में सहायक है।

बैद्यनाथ
शिलाजीत
गोल्ड
कैप्सूल
शक्ति एवं स्फूर्ति के लिए

CIN-U24233WB1947PTC015374

SHREE **Baidyanath** AYURVED BHAWAN PRIVATE LIMITED, PATNA
www.baidyanathayurveda.com Customer Helpline No.: +91 8252224135 /baidyanathinfo

HEMODEX®

Family Tonic

SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS
BALANCED NUTRITIONAL FORMULA
VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्वीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®

STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर–एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

PROTECTIVE COATING ACTION

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

रोशन गलियों का अंधेरा

रानी सिंह

"अरी ओ चंचल... सुन क्यों नहीं रही हो? कब से गला फाड़े जा रही हूं मैं और तुम हो कि चुप बैठी हो. आ कर खा लो न..." 60 साल की रमा अपनी 10 साल की नातिन चंचल को कब से खाने के लिए आवाज लगा रही थीं, लेकिन चंचल है कि जिद ठान कर बैठ गई है, नहीं खाना है तो बस नहीं खाना है.

"ऐ बिटिया, अब इस बुढ़ापे में मुझे क्यों सता रही हो? चल न... खा लें हम दोनों," दरवाजे पर आम के पेड़ के नीचे मुंह फुला कर बैठी चंचल के पास आ कर नानी ने खुशामद की.

"नहीं, मुझे भूख नहीं है. तुम खा लो नानी," कह कर चंचल ने मुंह फेर लिया.

"ऐसा भी हुआ है कभी? तुम भूखी रहो और मैं खा लूं..." कहते हुए नानी ने उसे पुचकारा.

"तो फिर मान लो न मेरी बात. मम्मी से बोलो, यहां आएं."

"अच्छा, बोलूंगी मैं. चल, अब खाना खा ले."

"तुम 10 दिन से तो यही बोल कर बहला रही हो, लेकिन मम्मी से नहीं कहती हो. अभी फोन लगाओ और मेरी बात कराओ. मैं खुद ही बोलूंगी आने के लिए. बोलूंगी कि यहीं कोई काम कर लें. कोई जरूरत नहीं शहर में काम करने की.

"मुझे यहां छोड़ कर चली जाती हैं और 3-4 महीने में एक बार आती हैं, वह भी एक दिन के लिए. ऐसा भी होता है क्या? सब की मां तो साथ में रहती हैं. लगाओ न फोन..." चंचल मन की सारी भड़ास निकालने लगी.

"तुम जरा भी नहीं समझती हो बिटिया. मम्मी काम पर होगी न अभी. अभी फोन करेंगे तो उस का मालिक खूब बिगड़ेगा और पैसा भी काट लेगा. फिर तेरे स्कूल की इस महीने की फीस जमा न हो पाएगी. जब फुरसत होगी, तब वह खुद ही करेगी फोन," नानी ने उसे समझाने की कोशिश की.

"ठीक है, मत करो. अब उन से बात ही नहीं करनी मुझे कभी. जब मन होता है बात करने का तो मैं कर ही नहीं सकती. वे जब भी करेंगी तो 4 बजे भोर में ही करेंगी. नींद में होती हूं तब मैं... आंख भी नहीं खुलती है ठीक से तो बात कैसे कर पाऊंगी? तुम ही बताओ नानी, यह क्या बात हुई..."

"अच्छाअच्छा, ठीक है. इस बार आने दो उसे, जाने ही नहीं देंगे," नानी ने उस का समर्थन किया.

"हां, अब यहीं रहना पड़ेगा उन्हें हमारे साथ. चलो नानी, अब खा लेते हैं... भूख लगी है जोरों की."

"हांहां, मेरी लाडो रानी. 12 बज गए

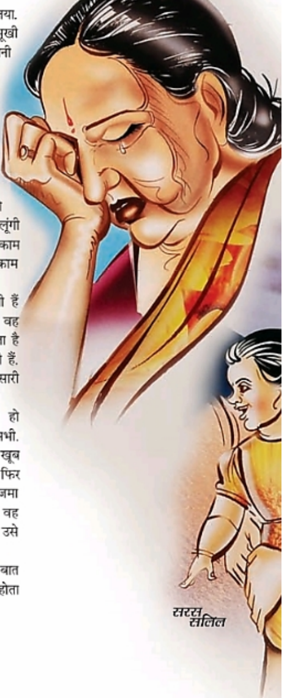

हैं, भूख तो लगेगी ही. चल..."

चंचल उछलतीकूदती नानी के साथ चली गई. दोनों साथसाथ खाने बैठीं. चंचल भूख के मारे दनादन दालभात के कौर मुंह में ठूंसती जा रही थी.

"ओह हो, शांति से खा न. ऐसे खाएगी तो हिचकी आ जाएगी," नानी ने टोका.

लेकिन वह कहां सुनने वाली थी. मुंह में दालभात ठूंसती जा रही थी.

"आने दो हिचकी. पानी है, पी लूंगी," चंचल लापरवाही से बोली.

नानी मुसकराईं और उसे देखते हुए पुरानी यादों में खो गईं...

बेचारी नन्ही सी जान. इसे क्या पता कि इस की मम्मी इस के लिए कैसे कलेजे पर पत्थर रख कर दूर रह रही है. आह, दिसंबर की वह सर्द रात... जब वह 8 दिन की इस परी को मेरी झोली में डाल गई थी.

पेटदर्द की न जाने कैसी बीमारी लगी थी मुझे. गांवघर के वैद्यहकीम से दवादारू कर के हार गई थी, लेकिन पेटदर्द जाने का नाम ही नहीं ले रहा था. रहरह कर दर्द उभर आता था.

कुछ पढ़ेलिखे लोगों ने कहा कि शहर में अच्छे डाक्टर से दिखा लो. दिखा तो लेती, लेकिन अकेली कैसे जाती? न पति, न कोई औलाद. बाप की एकलौती बेटी थी मैं. मां बचपन में ही गुजर गई थीं. मेरी शादी के 2 साल ही तो हुए थे और कोई बच्चा भी नहीं हुआ था. तीसरे साल में पति को जानलेवा बीमारी खा गई. बापू भी बूढ़े हो कर एक दिन परलोक सिधार गए.

रह गई मैं अकेली. दूसरी शादी भी नहीं की, मन ही उचट गया था. हाथ में हुनर था सिलाईबुनाई का तो कुछ काम मिल जाता और घर के पिछवाड़े 3 कट्ठा जमीन में सागसब्जी उगा लेती. जो आमदनी होती उसी से गुजरबसर होती रही.

पेट का दर्द अब असहनीय होने लगा था. बड़ी खुशामद के बाद पड़ोसी सहदेव का बेटा मुरली तैयार हुआ साथ में शहर जाने के लिए. शहर तो चली गई, लेकिन मुरली के मन में न जाने कौन सा खोट पैदा हुआ कि मुझे डाक्टर के यहां छोड़ कर बहाने से भाग निकला.

वह तो अच्छा था कि मैं ने पैसा उस को नहीं थमाया था, वरना...

खैर, मैं ने डाक्टर को दिखा तो लिया, लेकिन जब परचे पर जांचपड़ताल कराने के लिए कुछ लिख कर दिया तो अक्कबक्क कुछ न सूझ रहा था. भला हो उस कंपाउंडर बाबू का, जिस ने सब काम करा दिया.

रिपोर्ट 4 बजे के बाद मिलने वाली थी तो मैं वहीं बरामदे में बैठ कर रिपोर्ट और मुरली दोनों का इंतजार करने लगी. सोचा कि किसी काम से इधरउधर गया होगा, आ जाएगा. लेकिन यह क्या... 4 बज गए, रिपोर्ट भी आ गई, लेकिन मुरली का कोई अतापता नहीं. मन में चिंता हुई कि ठंड का मौसम है, 4 बज गए मतलब अब कुछ ही देर में अंधेरा घिर आएगा. घर कैसे जाऊंगी?

तभी कंपाउंडर बाबू ने रिपोर्ट ले कर बुलाया, तो मैं झोला उठाए चल दी.

डाक्टर साहब ने बताया, "जांच में कुछ गंभीर नहीं निकला है. ठीक हो जाओगी अम्मां. चिंता की कोई बात नहीं. ये सब दवाएं ले लेना," कह कर डाक्टर ने एक और परचा थमाया.

मन को शांति मिली. पास ही दवा की दुकान थी, वहीं से दवा ले ली. अब घर जाने की चिंता होने लगी. बसअड्डा किधर है? किस बस में बैठूं? इतनी देर हो गई, अभी बस खुलेगी भी कि नहीं? कुछ समझ नहीं आ रहा था.

कुछ ही देर में अंधेरा घिर आया तो मैं ने वहीं बरामदे के एक कोने में अपने झोले से चादर निकाली और ओढ़ कर यह सोच कर बैठ गई कि रात यहीं गुजार लेती हूं किसी तरह. सुबह कुछ उपाय सोचूंगी.

घर से लाई हुई रोटी और आलू की भुजिया रखी ही थी. भूख भी लग रही थी तो निकाल कर खा ली. 8 बजे वहां मरीजों की आवाजाही सी खत्म हो गई.

तभी गार्ड बाबू आ कर कड़क कर बोला, "ऐ माई, इधर सब बंद होगा अब. चलो, निकलो यहां से."

"बाबू, रातभर रहने दीजिए न. अकेली हूं और घर भी दूर है. सुबहसवेरे निकल जाऊंगी," मैं न जाने कितना

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।
GROWMED®
AD VITAMIN
बेबी ऑयल
नक्कालों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।
©: A-88094/2010
VITAMIN A, D, E AND OLIVE OIL
GROWMED
AD
VITAMIN
BABY OIL
FOR GROWTH AND VIGOUR OF BABIES
GUJARAT
अब
चंदन एवं गुलाब के
खुशबू में भी
GROWMED®
PAIN RELIEF Gel & Tablet
आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम
GROWMED PAIN RELIEF Gel
Diclofenac Diethylamine, Oleum Lini, Methyl Salicylate & Menthol Gel
15 gm
ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।
इसमें है Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U, Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

गिड़गिड़ाई, लेकिन पता नहीं किस मिट्टी का बना था वह. अड़ा रहा अपनी बात पर.

क्या करती मैं भी. झोला उठा कर ठिठुरते हुए सड़क पर निकल पड़ी. भटकती रही घंटों, पर कहीं कोई आसरा न मिला. ठंड भी इतनी कि सब लोगबाग घरों में दुबके थे.

चलतेचलते पैर थक गए तो एक मकान के छज्जे के नीचे सीढ़ी पर रात गुजारने की सोच कर झोला रखा ही था कि 2-4 कुत्ते एकसाथ टूट पड़े.

तभी अचानक से किसी ने जोर से मुझे अपनी तरफ खींचा और घर्रर... से एक ट्रक गुजरा. मुझे कुछ देर होश ही नहीं रहा.

जब होश आया तो देखा कि मैं एक पेड़ के नीचे लेटी थी और 22-23 साल की एक खूबसूरत युवती, जिस की गोद में नवजात बच्चा था, मेरा सिर सहला रही थी. तब सब समझ में आ गया कि अगर यह मुझे नहीं खींचती तो ट्रक मेरा काम तमाम कर देता.

"ऐसे बेखबर चलती हो... पता भी है रात के 12 बज रहे हैं, ऊपर से इतनी ठंड. और तो और आंख बंद कर के सड़क पर चलती जा रही हो. अभी ट्रक के नीचे आती और सारा किस्सा खत्म..." वह युवती मुझ पर बरसती जा रही थी, लेकिन उस का बरसना मन को सुकून दे रहा था.

पलभर में हमारे बीच न जाने कौन सी डोर बंध गई कि हम ने एकदूसरे के सामने अपने दिल खोल के रख दिए. उस के दर्द को जान कर कलेजा कांप गया मेरा.

उस का नाम मनीषा था. उसे उस की सौतेली मां ने 14 साल की उम्र में ही एक दलाल के हाथों बेच दिया था और यह बात फैला दी कि वह किसी के साथ भाग गई है.

दलाल ने उसे एक कोठे पर पहुंचा दिया और उस का नाम मोहिनी रख दिया गया. वह न चाहते हुए भी मालिक के इशारे पर नाचती. हर रात अलगअलग मर्द उस के जिस्म से खेलते. कई बार भागने की भी कोशिश की, लेकिन हर बार वह पकड़ी जाती और फिर दोगुनी मार सहती.

एक बार तो वह घर भी पहुंच गई थी, लेकिन सब ने अपनाने से इनकार कर दिया. खूब जलीकटी सुनाई. समंदर भर का दर्द ले कर वह लौट आई, फिर उसी अंधेरी गली में.

8 दिन पहले ही उस ने बेटी को जन्म दिया था. पेट से तो वह पहले भी 2 बार रही थी, लेकिन जैसे ही पता चलता कि पेट में लड़का है, फौरन पेट गिरा दिया जाता, क्योंकि लड़कों के जिस्म से कमाई नहीं होती न. इस बार लड़की थी तो उस का मालिक खुश था.

लेकिन मोहिनी हर हाल में अपनी बच्ची को इस दलदल से, इस अंधेरी दुनिया से बाहर निकालना चाहती थी. यही सोच कर वह आज छिपतेछिपाते बाहर निकली थी कि या तो कहीं भाग जाएगी या फिर बेटी के साथ नदी में कूद कर जान दे देगी.

"तुम जान देने की बात कैसे कर सकती हो बेटी, जबकि तुम ने मेरी जान बचाई है. नहींनहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकती," मुझे जान देने की बात बिलकुल भी पसंद नहीं आई.

"तो फिर मैं क्या करूं अम्मां? तुम ही बताओ कि भाग कर कहां जाऊं? लोग न मुझे चैन से जीने देंगे, न इस नन्ही सी जान को. ऐसी जिल्लत भरी जिंदगी से अच्छा है कि हम दोनों मर ही जाएं."

उस के मुंह से 'अम्मां' शब्द सुन कर मेरी छाती में ममता की धार फूट पड़ी.

"तुम ने मेरी जान बचाई है, तो मेरी जिंदगी तुम्हारी हुई न. अभीअभी तुम ने अम्मां बुलाया मुझे और मैं ने तुम्हें बेटी... है कि नहीं? तो एक मां के रहते बेटी को किस बात की चिंता? मेरी बेटी और नातिन मेरे साथ रहेंगी, मेरे घर," नन्ही सी बच्ची को चादर में लपेट कर अपनी छाती से लगा लिया था मैं ने.

"नहीं अम्मां, मैं तुम्हें किसी मुसीबत में नहीं डाल सकती," मोहिनी ने एकदम से इनकार कर दिया.

"कैसी मुसीबत...? बच्चे मां के लिए मुसीबत नहीं होते हैं. तू चल मेरे साथ. मेरा गांव शहर से दूर है, कोई खोज भी नहीं पाएगा," मैं ने खूब मनुहार की.

लेकिन वह थी कि मान ही नहीं रही थी. वह सुबकसुबक कर कहने लगी, "अम्मां, तुझे कुछ नहीं पता... नहीं पता कि इन चकाचौंध वाली गलियों के सरदार की पहुंच कितनी दूर तक है. बड़ेबड़े नेता, मंत्री, अफसर और भी न जाने कितने रसूखदारों को अपनी सेवा देते हैं ये लोग. ऐसी कई हस्तियों के हाथों लुट चुकी हूं मैं भी. मोहिनी का नाम और चेहरा सब का जानापहचाना है. फौरन ढूंढ़ लेंगे ये भेड़िए...

"अम्मां... अब इस नरक की आदी हो चुकी हूं मैं. अब तक कोई मलाल नहीं था, लेकिन अब इस नन्ही जान के लिए कलेजा मुंह को आ जाता है. इसे किसी भी कीमत पर इस नरक में न झोंकने दूंगी उस जालिम को, चाहे जान ही क्यों न देनी पड़े."

"तो क्या सोचा है तुम ने?" मुझ से रहा नहीं गया.

"अम्मां, एक एहसान करोगी मुझ पर?" वह कातर स्वर में बोली.

"तू बोल तो सही," मैं ने आश्वासन दिया तो वह बोली, "तू इसे रख ले अपने पास. पाल ले इसे. मैं खर्च भेजती रहूंगी. खूब पढ़ानालिखाना. और हां, मैं कभीकभी मिलने भी आती रहूंगी सब से छिप कर. लेकिन मेरी सचाई मत बताना कभी, वरना नफरत हो जाएगी इसे.

"जब पढ़लिख कर समझदार हो जाएगी तो सही समय पर सब सच बता देंगे. बोल अम्मां, तू करेगी यह एहसान मुझ पर?"

मैं ने उसे गले से लगा लिया और हामी भर दी.

"अम्मां, तुम्हारे गांव की तरफ जाने वाली पहली बस सुबह 5 बजे खुलती है. मैं बिठा दूंगी, तुम चली जाना. अभी तो 2 ही बज रहे हैं और ठंड भी इतनी है. चलो, कोई कोने वाली जगह ढूंढ़ लें, कम से कम ठंडी हवा से तो राहत मिले. नींद तो वैसे भी नहीं आएगी," कह कर उस ने मेरा झोला उठाया और चल पड़ी.

बच्ची मेरी गोद में थी. थोड़ी दूर चलने पर बसअड्डा आ गया. यात्री ठहराव के लिए बने हालनुमा बरामदे पर एक खाली कोने में हम ने रात काटी. वह रातभर बच्ची को अपनी छाती से लगाए रही.

हम दोनों सुबह मुंहअंधेरे उठ गईं. उस ने चादर से मुंह ढक लिया और टिकट ले आई. मुझे बस में बिठा कर उस ने अपने कलेजे के टुकड़े को सौंप दिया.

इस के बाद उस ने मेरे गांव का नामपता एक कागज पर लिख लिया, फिर बोली, "अम्मां, किसी को कुछ पता नहीं चलना चाहिए. आज से यह तुम्हारी है. मैं वहां सब से कह दूंगी कि ठंड लगने से मर गई तो फेंक आई नदी में..." उस की आंखें नम थीं, लेकिन एक अलग ही चमक भी थी. बस खुलने ही वाली थी. वह बच्ची को चूम कर तेजी से नीचे उतर गई.

तब से यह मेरे साथ ही है. मोहिनी 2-4 महीने पर आ जाती है मिलने. अब तो फोन खरीद कर दे दिया है, तो जब मौका मिलता है बात भी कर लेती है...

"अरी ओ नानी, हाथ क्यों रुक गया तुम्हारा? खाओ न. मैं इतना सारा नहीं खा पाऊंगी न," चंचल ने हाथ पकड़ कर अपनी नानी को झकझोरा, तो वे वर्तमान में लौट आईं.

"अरे हां, खा ही तो रही हूं. हो गया तुम्हारा तो तुम उठ जाओ," नानी हड़बड़ा कर बोलीं.

"तुम भी न नानी बैठेबैठे सो जाती हो," चंचल हंसते हुए बोली और चांपाकल की ओर भागी. ●

प्यार बढ़ेगा, दूध बहेगा!
कपिला
पशु आहार
एवं
कश्यप
सुप्रीम पैलेट SUPREME PELLET
सबसे ज्यादा 75% पोषण
अच्छा स्वास्थ्य | लंबी आयु | ज़्यादा दूध
AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY
एक मात्र निर्माता : कामधेनु कैटिल फीड्स प्रा० लि० ● 84/54, जरीब चौकी, जी.टी. रोड, कानपुर • Ph.: 0512-2520177, 2520178, 9235425981, E-mail :info@kapilacattlefeed.com

Divisa

SELECTED NO.1 BRAND INDIA 2016

20% EXTRA
Divisa
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Ayurvedic Proprietary Medicine
Safe for daily use

No More CONSTIPATION!

*If you are suffering from **Constipation, Gas or Acidity,** then use **'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets** today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.*

Raju Srivastav

CONSTIPATION

ACIDITY

GAS

Dr. Juneja's ®

पेट सफा

Natural Laxative Granules & Tablets

24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com
Available at all medical & general stores

भीगीभीगी सड़कों पर

रिमझिम झा

रात के तकरीबन 8 बज रहे थे. पटना शहर के शिवपुरी इलाके में अमूमन इस समय काफी चहलपहल रहती है, लेकिन उस दिन बारिश के मौसम ने सभी को घरों में सिमट जाने के लिए मजबूर कर दिया था. यही वजह थी कि सड़कें सुनसान पड़ी थीं. आसमान में कालेकाले बादलों ने शाम से ही डेरा जमा लिया था.

26 साल का गोरा, तंदुरुस्त नौजवान रुद्र प्रताप गाड़ी चला रहा था. बगल वाली सीट पर उस का खास दोस्त आदित्य बैठा था, जो देखने में सांवले रंग का इकहरे बदन का नौजवान था. रेडियो पर गाना बज रहा था 'भीगीभीगी सड़कों पर...' और दोनों साथसाथ मस्ती में गाते हुए जा रहे थे...

"यार रुद्र, क्या मस्त मौसम है, क्या शानदार गाना है, ऐसे में बस किसी अपने का साथ हो जाए तो जिंदगी में मजा आ जाए..." आदित्य ने खिड़की के कांच को नीचे कर के बाहर की ओर देखते हुए कहा.

"देख, अपनेवपने का मैं नहीं जानता, पर... अच्छा, चल तेरे सामने जो बक्सा है उसे खोल," रुद्र प्रताप ने दोस्त के मूड का खयाल रखते हुए कहा.

आदित्य ने बड़े जोश से बक्सा खोला और उछल पड़ा, "तू न सचमुच कमाल है, कमाल... लेकिन, ड्रिंक ऐंड ड्राइव... पकड़े गए तो... ?"

आदित्य एक साधारण परिवार का लड़का था. उसे दुनियादारी की खूब समझ थी, पर रुद्र प्रताप करोड़पति पिता का एकलौता बेटा था.

"कुछ नहीं होता, बस जेब में करारे नोटों की गड्डी होनी चाहिए... अब तू ज्ञान ही देगा या मजे भी करेगा..." रुद्र प्रताप को अपने पिता के पैसों पर बहुत घमंड था, यह उस की इस बात से साफ जाहिर हो रहा था.

"कुछ खाने के लिए नहीं है क्या?" आदित्य ने शराब की बोतल को आगेपीछे देखते हुए कहा.

"पीछे की सीट पर देख..." रुद्र प्रताप ने आदित्य को पीछे की ओर इशारा करते हुए कहा.

"आज तो बस हम मजे ही मजे करेंगे. एक काम करते हैं तेरे औफिस वाले फ्लैट पर चलते हैं," आदित्य ने सुझाव दिया.

"तू जैसा कहे..." रुद्र प्रताप ने भी हामी भरी.

"भीगीभीगी सड़कों पर...' दोनों एकदूसरे की ओर देख कर फिर से गाने लगे.

"यार रुद्र, इस गाने के साथ मेरे जज्बात कुछ ज्यादा ही मचल रहे हैं," आदित्य ने चेहरे पर शैतानी मुसकान लाते हुए कहा.

"हां यार, मेरे भी..." रुद्र प्रताप ने आंख मारी.

अचानक तभी उन्हें सड़क किनारे 2 लड़कियां खड़ी दिखाई दीं, जो इस तेज बारिश में लोगों से मदद मांग रही थीं.

"दीदी, बहुत ठंड लग रही है, जल्दी से घर चलो न..." बारिश में भीगती बिन्नी ने ठिठुरते हुए खुद को अपनी बड़ी बहन पूर्वी से चिपकाते हुए कहा.

"मैं समझ रही हूं बिन्नी, पर तुझे भी क्या जरूरत थी सुबह मेरे साथ ईंटभट्ठे पर आने की, अब कोई सवारी मिले तो चलूं न," परेशान पूर्वी ने चेहरे से पानी पोंछते हुए जवाब दिया. उस समय उस का पूरा ध्यान सड़क पर आजा रही गाड़ियों पर था.

"मरते समय बापू ने मुझ से वचन लिया था कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूं... उस का क्या?" बिन्नी ने ठिठुरते हुए भी जवाब दिया.

यह बात सुनते ही पूर्वी ने अपनी बहन के माथे को स्नेह से चूम लिया.

18 साल की पूर्वी अपनी 11 साल की बहन बिन्नी और मां के साथ शहर के भीतरी हिस्से में बनी झुग्गी बस्ती में रहती थी. उस की खूबसूरती में कोई कमी न थी, पर वह खूबसूरती लोगों को न दिखे, इस की कोशिश खूब होती थी. इस के लिए लोगों से कम बात करना, चिढ़ कर जवाब देना, बिना बात पत्थर चला देना जैसी बेतुकी बातें शामिल थीं.

ऐसा पहले नहीं था, पर पिछले साल पिता की मौत होते ही ऐसे लोगों की लाइन लग गई थी, जो पूर्वी की मजबूरी का फायदा उठाने की कोशिश कर रहे थे. अपने स्वाभिमान का खयाल रखते हुए वह ईंटभट्ठे पर बहीखाते के काम पर लग गई थी. उस ने सरकारी स्कूल में 10वीं जमात तक पढ़ाई भी की थी.

आज भी पूर्वी वहीं से लौट रही थी. रास्ते में बीमार मां के लिए दवाएं खरीदने लगी, तभी ईंटभट्ठे की ओर से निकलने वाली आखिरी बस छूट गई थी. नतीजतन, दोनों बहनें पैदल ही घर की ओर चल पड़ी थीं. उन्हें उम्मीद थी कि रास्ते में कोई न कोई इंतजाम हो ही जाएगा. लेकिन बरसात ने समस्या को बढ़ा दिया था.

तभी रुद्र प्रताप और आदित्य की गाड़ी वहां से गुजरी. दोनों लड़कों ने एकदूसरे की ओर शरारत भरी निगाहों से देखा और गाड़ी रोक दी. तब तक पूर्वी कार की खिड़की तक आ चुकी थी.

"झुग्गी बस्ती तक छोड़ देंगे बाबू..." पूर्वी ने हाथ जोड़ कर कहा.

बारिश में भीगती हुई लड़की, चेहरा पानी में धुल कर चमक रहा था. रुद्र प्रताप और आदित्य की मुंहमांगी मुराद जैसे सामने खड़ी थी.

'हांहां, क्यों नहीं...' दोनों एकसाथ बोल पड़े.

पीछे का दरवाजा खोल दिया गया. पूर्वी अपनी बहन के साथ गाड़ी में बैठ गई. गाड़ी चलने लगी. दोनों ने सामने के मिरर से पूर्वी को निहारा.

रुद्र प्रताप ने स्टेयरिंग से हाथ हटा कर आदित्य की ओर बढ़ाया. आदित्य ने इशारे को समझ उस के हाथ को गरमाहट से थाम लिया.

उस समय पूर्वी का परेशान चेहरा

फाइलेरिया
रोगों की आयुर्वेदिक दवा
टायफिल कैप्सलु एवं टायफिल तेल का प्रयोग करें।
फाइलेरिया से अण्डकोष या किसी अग में सुजन, पानी या मांस के आ जाने पर शीघ्र आरॉम
पैर के उंगली मे पानी लगजाने पर टायफिल तेल को लगा कर पैर को थोड़ा सेक ले
जिला और ब्लॉक स्तर पर स्टॉकिस्ट हेत सम्पर्क करें
STOCKIST:- DWAPER TRADERS | S.R ENTERPRISES
GOVIND MITRA ROAD, PATNA | 9835834770

घुंघराले बालों से ढका हुआ था, केवल पतले होंठ, जो बारिश में भीगने के चलते और भी गुलाबी हो गए थे, वही उन्हें दिख रहे थे. दोनों की बांछें ऐसे खिल गईं, जैसे पूर्वी उन्हीं के लिए आई हो.

"दीदी, पानी..." बिन्नी ने कराहते हुए कहा. बिन्नी का बुखार बढ़ता ही जा रहा था. होंठ सूख गए थे.

"बस, थोड़ी देर और बिन्नी..." कहते हुए पूर्वी ने अपने भीगे दुपट्टे से उस का चेहरा पोंछा.

दोनों लड़कों की दहकती निगाहें अब भी पूर्वी से चिपकी हुई थीं.

"दीदी, पानी..." और बिन्नी बेहोश हो गई.

"बिन्नी... बिन्नी..." पूर्वी ने जोर से आवाज लगाई.

बिन्नी का शरीर जैसे ढीला पड़ गया था. पूर्वी ने अपनी बहन को सीने से भींच लिया. बिन्नी का शरीर भट्ठी की तरह तप रहा था.

पूर्वी उस के शरीर की गरमी को अपने अंदर ले लेना चाहती थी. वह परेशान लड़की किसी से और मदद नहीं लेना चाहती थी, अपनेआप ही इस परेशानी को सुलझाना चाहती थी.

रुद्र प्रताप और आदित्य, जो अब तक औफिस वाले फ्लैट की प्लानिंग में उलझे हुए थे, बिन्नी के बेहोश होते ही जैसे होश में आ गए.

'क्या हुआ है बिन्नी को?' दोनों ने एकसाथ पूछा.

बेचैन पूर्वी ने इसी तरह अपने पिता को खो दिया था. उस दिन भी उस के पिता ने भी उसी की गोद में लेटे हुए आखिरी सांस ली थी. उसे वह सीन याद आने लगा और वह एक अलग ही दुनिया में खो गई.

तब तक रुद्र प्रताप ने गाड़ी रोक दी. वे दोनों पीछे आए. अचानक पूर्वी को खतरा सामने दिखने लगा, जिस के लिए वह कुछ हद तक तैयार भी थी.

पूर्वी ने बाएं हाथ से अपना चाकू, जिसे वह हमेशा अपनी कमर में खोंसे रखती थी, कस कर थाम लिया, लेकिन उस की जरूरत नहीं पड़ी.

गाड़ी में हलचल मच गई. पीछे की सीट पर आते ही रुद्र प्रताप ने बिन्नी के माथे को छुआ. आदित्य बिन्नी की हथेली और पैर को मलने लगा.

इतने में रुद्र प्रताप जल्दी जा कर आगे से पानी की बोतल ले आया और बूंदबूंद पानी बिन्नी के अधखुले होंठों पर लगातार गिराने लगा. आदित्य अब भी उस के हाथपैर मल रहा था.

"डाक्टर अंकल को फोन कर," आदित्य ने रुद्र प्रताप से कहा.

"हां, किया था मैं ने, नैटवर्क नहीं मिल रहा..." रुद्र प्रताप ने एक बार फिर नंबर डायल करते हुए कहा.

"चल, बिन्नी को क्लिनिक ले कर चलते हैं," आदित्य ने तेजी दिखाई.

"ठीक है," कहते हुए रुद्र प्रताप आगे आ गया.

पूर्वी अभी भी चाकू थामे उन दोनों की सारी बातें सुन रही थी.

क्लिनिक बंद होने ही वाला था. रात काफी गहरी हो चुकी थी.

"अंकल प्लीज... थोड़ा देखिए न, बिन्नी को क्या हो गया..." रुद्र प्रताप ने गिड़गिड़ाते हुए कहा.

डाक्टर बिना कुछ पूछे बिन्नी का मुआयना करने लगे और बोले, "सिस्टर, इन्हें वार्ड में ले चलो..."

थोड़ी देर बाद डाक्टर ने वार्ड से बाहर आ कर बताया, "घबराने की कोई बात नहीं है. कमजोरी, बुखार और भूखप्यास की वजह से बिन्नी बेहोश हो गई थी. सलाइन दी जा रही है, जल्दी ही उसे होश आ जाएगा.... हां, अगर और देर हो जाती तो मामला बिगड़ सकता था."

वे रुद्र प्रताप के फैमिली डाक्टर थे. वे तीनों रातभर वहीं रहे. गाड़ी में रखी खाने की चीजें तीनों ने मिलबांट कर खाईं.

सुबह तक बिन्नी को होश आ गया था. रुद्र प्रताप तो उन्हें उन के घर तक छोड़ना चाहता था, पर पूर्वी ने मना कर दिया.

पूर्वी ने उन दोनों का शुक्रिया अदा करना चाहा, पर उस से पहले ही रुद्र प्रताप बोल उठा, "देखो, थैंक्यू मत कहना. जो भी हुआ वह इनसानियत थी, उस के आगे कुछ नहीं."

वे दोनों बहनें वहां से जाने ही वाली थीं कि पीछे से रुद्र प्रताप ने कहा, "पूर्वी, चाकू का इस्तेमाल सही जगह पर जरूर करना."

यह सुन कर पूर्वी झेंप गई. उसे लगा कि उस की चोरी पकड़ी गई है. उस ने मुसकराते हुए अपनी नजरें झुका लीं और फिर एक नजर रुद्र प्रताप और आदित्य की तरफ देखते हुए वह घर की ओर चल दी. ●

क्या शराब ? लीवर खराब

वैद्य सत्य नारायण धौली प्याऊ मथुरा ने एक साक्षात्कार में बताया कि लिवर (यकृत) शरीर का बहुत प्रमुख अंग है। भोजन को पचाना तथा शुद्ध रक्त का निर्माण करना यकृत (लिवर) का मुख्य कार्य है।जो लोग शराब पीते हैं उनके यकृत प्लीहा में प्रायः शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण पेट में दर्द की शिकायत शुरू हो जाती है। खाना हजम नहीं होता, कभी दस्त तो कभी कब्ज होने लगता है। बहुत ज्यादा समय होने पर पीलिया जैसी जानलेवा तथा कमजोरी देने वाली बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं। हमारा कथन है कि लोग शराब पीना छोड़ दें, यदि नहीं तो कम से कम अपने लिवर (यकृत) का विशेष ध्यान रखें। ''यकृत शोधन'' भाप से बनी वो औषधि हे जो खाना खाने के बाद सुबह–शाम 4–4 चम्मच आधा गिलास पानी में पी जाती है। जिसका असर 12 घंटे में शुरू हो जाता है, सुबह को काला–काला मल निकलना शुरू हो जाता है और यकृत की शुद्धि प्रारम्भ हो जाती है। ''यकृत शोधन'' यकृत–प्लीहा के शोथ (एन्लार्जमेन्ट) में बहुत लाभकारी है। ''पाचन अमृत सुधा'' 8 चम्मच में 3 से 5 'यकृत शोधन'' मिलाकर खाना खाने के तुरन्त बाद पीने से दो गुना लाभ होता है।

नोट : बच्चों को भी '' यकृत शोधन'' लिवर (यकृत) रोगों में दिया जा सकता है।

YAKRAT SHODHAN
FOR LIVER DISORDERS

उपलब्ध न होने पर 9258040152 पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक आर्डर बुक करायें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के कुछ विक्रेताओं के नम्बर

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

जिस्म की सफेदी

नीरज कुमार मिश्रा

लखनऊ के हजरतगंज इलाके के एक शानदार कौंप्लैक्स में बने अपने औफिस में बैठा सुषेन दीवार पर लगे आईने में अपने चेहरे को देख रहा था. चेहरे की सफेदी को काली दाढ़ी ने काफी हद तक घेर रखा था.

इनसान की चमड़ी भी उस की जिंदगी में कितनी अहमियत रखती है... काली चमड़ी... गोरी चमड़ी... मोटी चमड़ी... खूबसूरत और बदसूरत चमड़ी...

खूबसूरत... हां... सुषेन भी तो खूबसूरत था... बांका और सजीला नौजवान... सुषेन 20 साल पहले की यादों में डूबने लगा था.

कालेज में बीएससी करते समय बहुत सी लड़कियां सुषेन की दीवानी थीं, क्योंकि वह दिखने में तो हैंडसम था ही, साथ ही साथ विज्ञान के प्रैक्टिकल करने में भी उसे महारत हासिल थी.

पर सुषेन के दिल में तो किसी और ही लड़की का राज था और वह लड़की थी एमएससी फाइनल में पढ़ने वाली सुरभि.

सुरभि और सुषेन दोनों अकसर लाइब्रेरी में मिलते थे और वहीं दोनों की आंखें मिलीं, बातें हुईं और 2 जवान दिलों में प्यार होते देर नहीं लगी.

सुरभि के घर वालों को इस रिश्ते से कोई परेशानी नहीं थी और सुषेन ने भी बगैर यह सोचे ही हामी भर दी थी कि क्या उस के घर वाले उस से उम्र में 2 साल बड़ी लड़की से शादी करने की इजाजत देंगे?

और वही हुआ भी. सुषेन के घर वालों को उस की उम्र से बड़ी लड़की से शादी कर लेने पर घोर एतराज हुआ, पर शायद सुषेन मन ही मन ठान चुका था कि उसे अपनी आगे की जिंदगी कैसे और किस के साथ गुजारनी है, इसलिए उस ने पहले अपनी पढ़ाई पूरी की और फिर नौकरी लगने के बाद सुरभि के साथ ब्याह भी रचा लिया.

सुषेन और सुरभि के ब्याह में सुषेन के घर से कोई नहीं आया था. मतलब साफ था कि उस ने घर वालों से बगावत कर के यह शादी की थी और इसी के साथ ही सुषेन के घर वालों ने उसे अपनी जायदाद से बेदखल कर दिया था.

सुरभि को पाने के लिए सुषेन ने अपना सबकुछ खो दिया था और इतनी पढ़ीलिखी और समझदार पत्नी पा कर वह मन ही मन बहुत खुश भी था.

सुरभि खुश थी और सुषेन भी, पर अचानक उन की खुशियों को तब ग्रहण लग गया, जब एक दिन शेव करते समय सुषेन को अपने होंठों के किनारे एक छोटा सा सफेद दाग दिखाई दिया.

सभी की तरह सुषेन ने भी यह सोच कर अनदेखा कर दिया कि शायद ज्यादा सिगरेट पीने की वजह से होंठ कुछ सफेद हो गया होगा, पर उस की चिंता कुछ महीनों बाद बढ़ गई, क्योंकि वह छोटा सा दाग अब न केवल बड़ा हो गया था, बल्कि उसी तरह के चकत्ते शरीर में और जगह भी हो गए थे.

'तो क्या मुझे सफेद दाग हो गया है?' सुषेन मन ही मन शक से बुदबुदा उठा था. डाक्टर को दिखाया तो उस का डर सही निकला. सुषेन को सफेद दाग नामक बीमारी हो गई थी.

'मुझे सफेद दाग जैसी बीमारी कैसे हो गई, क्योंकि मैं तो बहुत साफसफाई से रहता हूं... जल्दी किसी से हाथ नहीं मिलाता और अगर मिलाना भी पड़ जाए तो तुरंत हाथों को सैनेटाइज करता हूं... फिर भी... मुझे... कैसे? क्यों?' वगैरह सवाल सुषेन के दिमाग में घूम रहे थे.

"लोग मुझे देख कर नजरें चुरा लेते हैं... मेरी सूरत की तरफ कोई देखना भी नहीं चाहता है... मैं क्या करूं?" एक दिन सुषेन ने अपने खास दोस्त राघव से कहा.

राघव ने उसे एक बाबा का पता बताया और कहा, "वे बाबा तुम्हारे बदन पर भभूत मलेंगे और कुछ तंत्रमंत्र... और बस तू भलाचंगा हो जाएगा."

सुषेन बिना देर किए उस बाबा के पास पहुंचा. बाबा ने सुषेन को ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, "यह सफेद दाग की बीमारी है, जो पिछले जन्म के पाप कर्मों से ही पनपती है. तू ने जरूर किसी सफेद खाल वाले बेजबान जानवर को सताया होगा, इसीलिए तेरा खून खराब हो चुका है और तेरी खाल का रंग भी सफेद हो गया है.

"हमें तेरे खून को साफ करने के लिए सोनेचांदी की भस्म का लेप पूरे बदन पर लगाना होगा और सोने को गला कर उस का काढ़ा तुझे पिलाना होगा, तब कहीं जा कर यह बीमारी सही हो पाएगी, पर..."

"पर, क्या बाबा?" सुषेन ने पूछा.

"क्या है कि इलाज थोड़ा महंगा होगा, इसलिए कुछ एडवांस भी जमा करना पड़ेगा तुझे," बाबा ने कहा.

"कितना भी महंगा इलाज हो बाबा, आप बस मुझे ठीक कर दो. मैं तो समाज में बैठने लायक नहीं रह गया हूं. आप इलाज शुरू कीजिए, मैं पैसे का इंतजाम करता हूं," यह कहते हुए सुषेन बहुत जोश में लग रहा था.

बाबा ने इलाज का खर्चा 50,000 रुपए बताया था और 25,000 रुपए पहले ही जमा करा लिए थे.

बाबा ने इलाज शुरू किया. सुषेन को कई तरह के काढ़े पिलाए गए, शरीर के ऊपर भभूत भी मली गई, पर उन सब चीजों से उसे फायदा मिलने

क्या आप?
के रोगों से परेशान हैं? हृदय
धमनीरिल
कैप्सूल
DHAMNIRIL Capsules
आर्टिरियल ब्लाकेज, हाई या लो ब्लड प्रेशर, दिल का घबराना, अचानक धड़कन का कम या ज्यादा होना, सांस फूलना, रक्त प्रवाह (ब्लड फ्लो), की कमी के कारण पक्षाघात (पैरालेसिस) होना आदि में भी लाभदायक है।

लिवर, प्रोस्टेट, मूत्र विकार रोगों के लिये आयुर्वेदिक औषधि
अष्ठीलारिल
कैप्सूल
अष्ठीलारिल
*पौरुष ग्रंथी(प्रोस्टेट ग्लैंड)वृद्धि
*मूत्र त्याग करते समय दर्द और जलन
*मूत्र प्रणाली के संक्रमण(इंफेक्शन)
*यकृत(लिवर)विकास में *किडनी(गुर्दा)विकार में
*हाथ-पैर, चेहरे, शरीर के सूजन में लाभप्रद औषधि
सभी मेडिकल एवं आयुर्वेदिक स्टोर पर उपलब्ध

देवी आयुर्वेदिक फार्मा मो०:9793282828,9889704060,वेबसाइटः
www.deviayurvedic.com

के बजाय नुकसान ही होता गया.

धीरेधीरे सुषेन हर तरफ से इलाज करा कर हार गया था. पाखंडी तांत्रिकों, झोलाछाप डाक्टरों, मुल्लेमौलवियों सब ने सुषेन को बस लूटा ही था.

सुषेन एक तरफ तो इस बीमारी के चलते दिमागी तौर पर परेशान रहता था, दूसरी तरफ सामाजिक बहिष्कार ने उसे दुखी कर रखा था और तीसरी तरफ उसे यह भी लगने लगा था कि सुरभि की नजरों में अब उस के लिए प्यार की जगह तिरस्कार आता जा रहा है. अब वह पहले की तरह उस के पास नहीं बैठती थी और रात में उस के सोने के बाद वह अकसर सोफे पर चली जाती है और उसे शारीरिक संबंध भी नहीं बनाने देती है.

सुषेन को एहसास होने लगा था कि सुरभि अब उसे छोड़ देगी. सुरभि से इस बारे में पूछने पर उस का बड़ा सहज सा जवाब आया था, "हां."

सुषेन के कानों में बहुतकुछ सनसनाता सा चला गया. उस ने जो सुना था, उस पर उसे भरोसा नहीं हो रहा था.

"बुरा मत मानना, पर अब तुम्हें यह लाइलाज बीमारी हो गई है. तुम्हें तो इसी के साथ जीना होगा, पर मैं अभी जवान और खूबसूरत हूं. अपने पिछले जन्म के कर्मों का कियाधरा तुम भुगतो... मैं भला उस में क्यों पिसूं?

"मेरी और तुम्हारी राह आज से अलग है. मैं ने वकील से बात कर ली है. आपसी रजामंदी रहेगी तो तलाक आसानी से हो जाएगा..." सुरभि ने बड़ी आसानी से इतनी बड़ी बात कह दी.

दोनों में तलाक हो गया. सुरभि कहां गई, यह जानने में सुषेन को कोई दिलचस्पी नहीं थी. वह अब मन ही मन घुटने लगा था. तनाव हमेशा उस के दिमाग और चेहरे को घेरे रहता. खुदकुशी तक करने का विचार आया, पर सुषेन को लगा कि यह तो सरासर बुजदिली होगी.

सुषेन ने अपनेआप को संभाला तो थोड़ा सहारा उसे रमोला ने भी दिया, जो उस के साथ ही काम करती थी. रमोला यह भी जानती थी कि अगर इस समय सुषेन को सहारा नहीं दिया गया तो वह कुछ भी कर सकता है.

"सुषेनजी, क्या आज आप मुझे मेरे घर तक छोड़ सकते हैं? अंधेरा ज्यादा हो गया है और आजकल शहर में अकेली औरत का निकलना सही नहीं है," एक दिन रमोला ने सुषेन से कहा.

"क्यों नहीं... बिलकुल छोड़ दूंगा... बस, 15 मिनट और रुक जाइए, फिर साथ निकलते हैं," सुषेन ने हामी भरते हुए कहा.

दरअसल, रमोला एक तलाकशुदा औरत थी. उस के पति ने सांवला रंग होने के चलते उस से तलाक ले लिया था और अब वह अकेली ही जिंदगी काट रही थी.

जब सुषेन अपनी मोटरसाइकिल पर रमोला को उस के घर छोड़ने जा रहा था, तब उस ने महसूस किया कि रमोला उस से कुछ ज्यादा ही सट कर बैठी है.

पहले तो सुषेन को लगा कि यह अनजाने में भी हो सकता है, पर जब लगातार रमोला ने अपने गदराए जिस्म को सुषेन के बदन से सटाए रखा तो वह समझ गया कि रमोला को मर्दाना जिस्म की जरूरत है.

"अंदर आ कर एक कप चाय तो पी लीजिए," रमोला ने कहा तो सुषेन भी मना नहीं कर सका.

वे दोनों अंदर आए ही थे कि बारिश शुरू हो गई. रमोला किचन में चाय बनाने चली गई. सुषेन को रमोला का यह लगाव बहुत सुहा रहा था.

"रमोलाजी, आप मुझे अपने घर के कप में चाय पिला रही हैं. क्या आप को मुझ से कोई परहेज नहीं है? मेरा मतलब है कि मेरे इन सफेद दाग की वजह से?"

"नहीं सुषेनजी, मैं ने आप को आज से पहले भी देखा है. आज भी आप इतने हैंडसम हैं, जितना पहले थे."

यह सुन कर सुषेन को बहुत अच्छा लगा और वह रमोला की तरफ खिंचता चला गया. रमोला भी मन ही मन सुषेन को पसंद करती थी, जिस का नतीजा यह हुआ कि उन दोनों में जिस्मानी संबंध बन गए.

बाद में उन दोनों ने इस रिश्ते को एक नाम देने की सोची और आपस में शादी कर ली. दोनों एकदूसरे के साथ जिंदगी बिता कर बहुत खुश थे, पर सुषेन के मन में कहीं न कहीं अपनी बीमारी को ले कर निराशा भी थी, क्योंकि समाज में उसे एक छूत की बीमारी माना जाता था और उस ने महसूस किया कि देश में ऐसे न जाने कितने लड़केलड़कियां हैं, जिन की शादी इस बीमारी के चलते नहीं हो पाती है.

लिहाजा, सुषेन और रमोला ने इस दिशा में कुछ ठोस काम करने की सोची और अपने खर्चे पर ऐसी 2 लड़कियों की शादी कराई, जिन की शादी में अड़चनें आ रही थीं. इस काम में कुछ समाजसेवी संस्थाओं ने भी उन की पैसे से मदद की थी.

आज जीतोड़ मेहनत कर के उन्होंने देश में अपनी एक अलग पहचान बना ली है और इस काम को ढंग से करने के लिए उन के पास एक शानदार औफिस भी है.

आज सुरभि को सुषेन की जिंदगी से गए पूरे 25 साल हो गए थे. सुषेन अपने औफिस में बैठा हुआ काम में बिजी था कि उस के चपरासी ने बताया, "सर, कोई आप से मिलना चाहता है."

सुषेन ने अंदर बुलवाने को कहा. थोड़ी देर में एक औरत एक आदमी के साथ अंदर आई. उन के साथ शायद उन की भी बेटी थी.

25 साल का समय लंबा जरूर होता है, पर इतना लंबा भी नहीं कि आप उसे पहचान न सकें, जिस से शादी करने के लिए आप ने अपने घर वालों से बगावत कर दी थी. यह सुरभि थी. सुषेन उसे देखते ही पहचान गया था.

"जी, बात यह है कि मेरी बेटी को सफेद दाग की बीमारी है और इसी वजह से उस की शादी में अड़चन आ रही है," वह आदमी बोला.

'तो यह सुरभि का पति है. इस का मतलब है कि मुझे छोड़ते ही सुरभि ने इस आदमी से शादी कर ली थी और यह लड़की भी इसी आदमी की है, क्योंकि मुझे तो सुरभि ने अपने पास ही फटकने नहीं दिया था,' सुषेन के मन में यह सब चल रहा था.

"जी, ठीक है. आप अपनी बेटी का नाम और उस के फोटो हमारे पास जमा करवा दीजिए. हमारी तरफ से जो भी मदद होगी, वह आप को दी जाएगी," सुषेन ने सुरभि को देखते हुए कहा, जो उस की घनी दाढ़ी के बीच छिपे चेहरे को पहचान लेने के बाद भी अनजान बनने की कोशिश कर रही थी. ●

अब लाइलाज कैंसर का इलाज हर्बल दवाओं से भी सम्भव

अभी तक आम आदमी के मन में यही धारणा बैठी हुई है कि कैंसर लाइलाज बीमारी है। भारत में हर्बल चिकित्सा प्रणाली से गम्भीर रोगों के इलाज की इसमें व्यवस्था है तथा कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी से भी छुटकारा पाया जा सकता है। इस चिकित्सा द्वारा सभी प्रकार के कैंसर का इलाज संभव है।

कैंसर होने के कारण

वैसे तो कैंसर होने का कोई निश्चित कारण नही होता है फिर भी ज्यादातर कारणों में धूम्रपान, तम्बाकू, गुटखा, शराब, फास्टफूड, अनियमित दिनचर्या आदि कारण प्रमुख है।

हर्बल चिकित्सा ने दिया कैंसर रोगी को जीवनदान

मुंह के कैंसर व गांठ से पीड़ित **इस्लामुद्दीन गौरी निवासी सिंघाई निघासन लखीमपुर खीरी** को एक साल से कैंसर था और वह केवल तरल पदार्थो पर ही निर्भर थे इन्होने सीतापुर, लखनऊ में कई डॉक्टरो से इलाज कराया लेकिन कोई फायदा नही हुआ। डॉ. साहब की आयुर्वेदिक दवा से तीन महीने में ही 95 प्रतिशत तक लाभ मिल गया है और अभी भी इलाज जारी है। अब वह सभी प्रकार का खाना भी खाने लगे है।

ROYAL HERBAL
CLINIC LUCKNOW
AFTER 4 DAY

अन्य जटिल रोगों का उपचार
जैसे शुगर, पाइल्स
(बवासीर, खूनी व बादी)
बालो का गिरना, माहवारी में
अनियमितता, ओवरी में गांठ,
गंजापन आदि का इलाज

ROYAL HERBAL
CLINIC LUCKNOW
AFTER 20 DAYS

कैंसर इलाज में डॉ. अहमद साहब का योगदान

डॉ साहब का कहना है कि किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार का कैंसर है तो अपनी रिपोर्ट ले कर प्रातः 10 बजे से 6 बजे तक क्लीनिक पर आकर मिल सकता है। डॉ. साहब रियायती दरों पर दवाएं देते है एवं अन्य किसी भी प्रकार का शुल्क नही लिया जाता है।

परामर्श निःशुल्क

रायल हर्बल क्लीनिक
केशव कॉम्प्लेक्स, लेखराज मेट्रो स्टेशन के पास,
इन्दिरा नगर, लखनऊ, मोः 9984503030

समय : प्रातः 10 बजे से सायं 6 बजे तक

भेड़िए

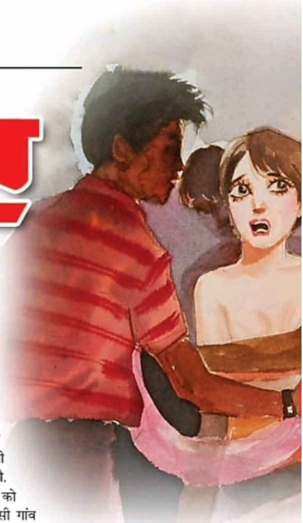

फारूख हुसैन

बेला तकरीबन 9-10 साल की लड़की थी. हरदम खिलखिलाने वाली और नटखट, जो गांव से अम्मांबाबा के साथ शहर में अपनी बड़ी बहन की दवा लेने आई थी.

शहर की चकाचौंध, भीड़भाड़ और ऊंचेऊंचे मकान देख कर बेला दंग रह गई थी. सड़क पर तेजी से इधरउधर भागती गाड़ियां और उन का शोर कान फाड़ देने जैसा था. किसी के पास इतना समय नहीं था कि किसी से बात भी कर ले. ऐसा लग रहा था कि किसी के पास सांस लेने की भी फुरसत नहीं थी.

"इस से अच्छा तो गांव है, जहां लोगों में अपनापन तो दिखाई देता है," कह कर बेला ने अपना मुंह बिचकाया.

बेला चारों तरफ देख ही रही थी कि सामने गुब्बारे वाले को देख कर उस का बालमन गुब्बारा लेने के लिए मचल गया और वह अम्मां को बिना बताए गुब्बारे वाले के पास चली गई.

गुब्बारा ले कर जब बेला वापस मुड़ी तो उसे कहीं भी अम्मांबाबा दिखाई नहीं दिए. वह घबरा गई और उन्हें पुकारते हुए ढूंढ़ने लगी, लेकिन उसे अम्मांबाबा कहीं नहीं मिले.

बेला को रोना आ रहा था, लेकिन वह रोई नहीं, क्योंकि अगर वह रोएगी तो भी यहां उस की सुनने वाला कोई नहीं था. हां, गांव होता तो लोग उस के पास आ जाते और उसे घर पहुंचा देते.

काफी समय बीत चुका था, लेकिन अभी तक बेला के अम्मांबाबा नहीं मिले थे. हाथ में पकड़ा गुब्बारा जैसे उसे चिढ़ा रहा था कि बिना अम्मां को बताए मुझे लेने आ गई, अब मजा आ रहा है न...

जैसेजैसे सूरज डूब रहा था, वैसेवैसे मासूम बेला की दहशत बढ़ती जा रही थी, क्योंकि उस ने अकसर अम्मांबाबा को यही कहते सुना था कि शहर में सब इनसान के रूप में भेड़िए रहते हैं, जो मासूम लड़कियों को अपना शिकार बना लेते हैं.

यही वजह है कि बेला के अम्मांबाबा उसे जल्दी कहीं नहीं जाने देते. वह बस गांव में अपनी सहेली पिंकी, संगीता और फूलबानो के साथ खेलती और उन के साथ ही स्कूल जाती.

"अरे, यह लड़की इतनी रात को अकेली कहां घूम रही है? किसी गांव की लगती है," कह कर कुछ लोग बेला की तरफ बढ़े.

उन लोगों की आवाज सुन कर बेला चौंक गई. उन्हें अपनी तरफ आते देख कर उसे लगा कि कहीं ये वही भेड़िए तो नहीं, जो उसे नोच कर खा जाएंगे?

यह सोचते ही बेला फौरन वहां से भाग खड़ी हुई. वे लोग उसे आवाज ही लगाते रहे, पर वह सड़क पर भागती चली गई. वह तब तक नहीं रुकी, जब तक पूरी तरह से थक नहीं गई.

बेला से अब एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा रहा था. वह वहीं एक खाली पड़े चबूतरे पर बैठ गई. उसे अब भूख भी बहुत तेज लगी थी, लेकिन यहां उसे कौन खाने को देता? अगर वह घर पर होती तो अम्मां उस के लिए गरमागरम दालभात ले आती.

बेला ने इधरउधर देखा. चारों ओर सन्नाटा फैल गया था. अब उसे बहुत डर लग रहा था और अपने बाबा की बहादुर लाडो की आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी.

तभी सामने कुछ ही दूरी पर बेला को एक औरत खड़ी दिखाई दी, जो काफी

यूनाईटेड®
प्रेशर कुकर
देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद..
यूनिराइज़
United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

SULABH
BRONKO CURES
बच्चों के ब्राँकाइटिश न्यूमोनियाँ, दमा
दमफूली, हावा-डावा की अत्युत्तम औषधि।
आजमाइश कर देखें...
JHACTIONS HOMOEO PVT. LTD.
Ph.: 9973516445
www.jhactionshomoeo.com
सभी होमियोपैथी स्टोर्स पर उपलब्ध

गर्भपाल चूर्ण™
अग्रसेन
मिलते जुलते नामों से सावधान
नक्कालों से सावधान
हरविट™
स्ट्रॉंग पाउडर
गर्म (HEAT) पाउडर प्रजनन चूर्ण
जो पशु (मवेशी) पाल, गर्म (HEAT) प्रजनन लायक नहीं हो रहा हो, उसे देना अनिवार्य है।
एक ही खुराक काफी है।
बतीसा
पाचक, शक्ति बर्द्धक विटामिन युक्त
एवं लिवर स्ट्रांग पाउडर
• खाया • पीया • पचाया
अग्रसेन आयुर्वेद भवन प्राइवेट लिमिटेड
व्यापारिक पूछताछ- मोबाइल नं 09279213720, Email : agrasenayurved@gmail.com, Website : www.agrasenayurved.com

संजीसवरी थी. उस के हाथों में एक पर्स भी था. उस ने सोचा कि क्यों न वह उस से मदद मांगे.

बेला उस औरत के पास जाने की सोच ही रही थी कि तभी उस औरत के पास एक बड़ी सी गाड़ी आ कर रुकी और वह उस में बैठ कर कहीं चली गई.

अब बेला किस से मदद मांगे? उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था. वह फिर उठी और एक ओर चल दी. सामने फिर कुछ लोग उस की ओर आते दिखे.

वह और ज्यादा डर गई. वह फिर भागने को हुई और जैसे ही भागी तो थकान और भूख की वजह से चक्कर खा कर वहीं गिर गई. उसे गिरता देख कर वे लोग उस के पास आ गए और उठाने लगे.

"छोड़ दो मुझे... मुझे नोचनोच कर मत खाना. मैं अब कभी शहर नहीं आऊंगी. न ही अम्मांबाबा को बिना बताए गुब्बारा लेने जाऊंगी," बेला बेतहाशा चीखती जा रही थी.

बेला की बातें सुन कर वे लोग समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर लड़की यह बोल क्या रही है? वे उस से कुछ पूछते, तब तक वह बेहोश हो चुकी थी.

वे लोग मजदूर थे, जो काम खत्म करने के बाद अपने घर जा रहे थे. बेला को देख कर वे इतना तो समझ गए थे कि वह गांव से शहर अपने मांबाप के साथ किसी काम से आई थी.

"चलो, इसे घर ले चलते हैं. सुबह पता कर के इस के घर पहुंचा देंगे," उन में से एक मजदूर बोला.

"हां राकेश, ले चलो. यह मासूम बच्ची बहुत भूखी और थकी हुई भी लग रही है," उस मजदूर का साथी हां में हां मिलाते हुए बोला.

वे लोग बेला को उठा कर अपने साथ घर ले आए. जब बेला की आंख खुली तो वह एक बिस्तर पर लेटी हुई थी और एकदम सहीसलामत थी. किसी भेड़िए ने उसे नहीं नोचा था. वह बिस्तर पर बैठ गई.

तभी एक औरत एक थाली में दालभात ले कर आ गई और बोली, "लो, खाना खा लो, फिर कल हम तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देंगे," कह कर वह औरत अपने हाथों से उसे दालभात खिलाने लगी.

बेला को लगा जैसे वह उस की अम्मां हो. वह चुपचाप खाना खाने लगी. खाना खातेखाते उस ने उन लोगों को अपना, अम्मांबाबा का और अपने गांव का नाम बता दिया. खाना खा कर वह बातें करतेकरते सो गई.

सुबह जब बेला की आंख खुली तो दिन काफी चढ़ आया था. उस के सामने ही एक खाट पर उस के अम्मांबाबा बैठे हुए थे, जो उन लोगों को बारबार धन्यवाद दे रहे थे.

अम्मांबाबा को देख कर बेला खुशी से झूम उठी और उठ कर तुरंत अम्मां की गोद में बैठ गई. उस के यहां होने की खबर अम्मांबाबा को उन लोगों ने ही पहुंचाई थी, इसीलिए वे उसे लेने आ गए थे, जिस के बाद बेला अपने गांव चली आई.

जब बेला अपने घर पहुंची तो उस ने देखा कि उस की सहेली संगीता के घर बहुत भीड़ लगी हुई थी. सामने ही संगीता लेटी हुई थी. उस के कपड़ों पर जगहजगह खून लगा हुआ था. बेला को समझ नहीं आ रहा था कि संगीता को क्या हुआ है.

"अरे, बोटीबोटी नोच ली मेरी बेटी की भेड़ियों ने, तरस नहीं आया इस मासूम पर भी," संगीता की मां चीखचीख कर बोलती जा रही थीं और रो भी रही थीं.

उन की बात सुन कर बेला समझ गई कि उस की सहेली को भी भेड़ियों ने पकड़ लिया है, लेकिन वह यह समझ नहीं पाई कि शहर में तो वह खो गई थी, तो फिर गांव में उस की सहेली...

तभी पुलिस वाले 2 लड़कों को पकड़ कर मारते हुए वहां ले कर आए. उन में से एक पुलिस वाले ने कहा, "ये रहे भेड़िए."

उन भेड़ियों को देख कर बेला हैरान रह गई और बोली, "ये तो अमित चाचू और राजन चाचू हैं..." ●

ORIENTAL CHEMICAL WORKS
CELEBRATING
1929 92 2021
YEAR OF ESTABLISHMENT
RAU, INDORE
दाद, खाज खुजली है?
हमें भी होती है
दाद, खाज, खुजली से तुरंत आराम
ZALIM LOTION
For Ringworm and Itches
जालिमलोशन
दाद, खुजली की दवा
जालिमलोशन®
Fastest > Trusted > Tested
...पीढ़ियों से
मेडिकल स्टोर से तुरंत खरीदें
Retailers may also buy online : www.zalimlotion.in ✉ zalimlotion1929@gmail.com
ANIL PUB.

मैट्रो सिटी

अब्दुल गफ्फार

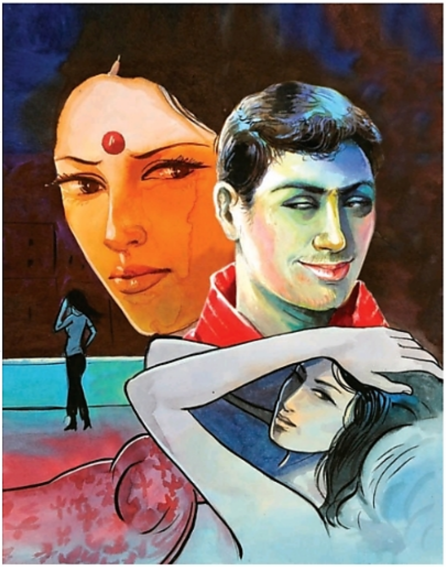

यूट्यूब पर अपनी वीडियो क्लिप देख कर श्रुति के पसीने छूटने लगे. उस के मुंह से सहसा निकल पड़ा, "अब तो मैं किसी को मुंह दिखाने लायक भी नहीं रही."

श्रुति ने मोबाइल फोन तकिए पर रखा और हाथ को आंखों पर रख कर सिसकने लगी. उस के दिमाग में परसों रात वाली बातें कौंधने लगीं.

रात के 11 बज रहे थे. टौपजींस पहने, आंखों पर चश्मा चढ़ाए, एक हाथ में पर्स लटकाए श्रुति किसी मौडल की तरह बनीठनी एक पुल के नीचे खड़ी थी. यही उस का इलाका था. 100-200 मीटर आगेपीछे की रेंज में वह रोजाना यहीं खड़ी होती थी.

यह जगह श्रुति के घर से 10-12 किलोमीटर की दूरी पर थी. वह घर में सब को खाना खिला कर नाइट ड्यूटी के बहाने 11 बजे घर से निकलती और बैटरी रिकशा पकड़ कर यहां आ जाती.

श्रुति एक प्राइवेट अस्पताल में नर्स का काम करती थी. उस अस्पताल की साख अच्छी नहीं थी. अस्पताल में न डाक्टर अच्छे थे, न सुविधाएं अच्छी थीं. वहां बस गिनती के ही मरीज आते थे. जो आते थे, वे भी कमीशन एजेंटों के दम पर आते थे. महज 3,000 रुपए महीना उस की तनख्वाह थी, जबकि उस के घर का खर्च 15,000 रुपए के आसपास था.

6 महीने पहले इसी अस्पताल की एक दूसरी नर्स ने श्रुति को यह शौर्टकट रास्ता सुझाया था. श्रुति अस्पताल जाती, हाजिरी लगाती, थोड़ी देर 1-2 मरीजों की देखभाल करती, फिर निकल जाती अपने ग्राहकों का इंतजार करने.

श्रुति का पति अरुण दिल्ली में एक बैटरी रिकशा चालक था, जो पिछले साल 3 बच्चों, पत्नी और मां को छोड़ कर कोरोना की भेंट चढ़ चुका था.

अरुण से पहले अरुण के पिता रामेश्वर प्रसाद भी, जो लकवे के मरीज थे, कोरोना की भेंट चढ़ चुके थे.

5 साल पहले श्रुति के मांबाप ने खाताकमाता लड़का देख कर ही उस की शादी की थी. उस का पति अरुण अच्छे से परिवार का भरणपोषण करता भी था, लेकिन बुरा हो इस कोरोना वायरस का, जिस की चपेट में अरुण आ गया और श्रुति के सिर पर जिम्मेदारियों का पहाड़ लाद कर चला गया.

श्रुति की बड़ी और मंझली बेटी एक प्राइवेट स्कूल में क्लास 3 और 2 में पढ़ती थीं. सब से छोटा एक साल का बेटा था. डायबिटीज के चलते अरुण की मां दामिनी की एक किडनी खराब हो चुकी थी. 4,000 रुपए बच्चों की फीस, 4,000 रुपए दवा का खर्च और महानगर में रहनेखाने के खर्च का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है.

जिस घड़ी श्रुति रात में घर से बाहर निकलती, उस की बूढ़ी बीमार सास दामिनी समझ जाती कि बहू गलत रास्ते पर जा रही है, लेकिन अपनी महंगी दवाओं का खर्च और परिवार की तंगहाली के चलते वह श्रुति को रोक पाने की हालत में नहीं थी.

श्रुति ने अपने हाथों को आंखों से हटाया और छत को घूरने लगी. आंसुओं से तकिए के दोनों किनारे भीग चुके थे. उसे क्या पता था कि ग्राहक के वेश में मोलभाव करने वाला वह नौजवान उस की वीडियो क्लिप बना रहा था.

उस नौजवान के हाथों में न मोबाइल फोन था, न कैमरा... फिर कैसे? शायद उस की कमीज के बटन में या जेब में टंगे पैन में छिपा कैमरा लगा हुआ था.

श्रुति ने एक बार फिर यूट्यूब खोला और उस वीडियो क्लिप को देखने लगी. वह नौजवान पूछ रहा था, 'कितना लेती हो?'

'2,000...' श्रुति बोली थी.

'2,000... 2,000 रुपए ज्यादा नहीं हैं क्या...'

'नहीं, ज्यादा नहीं हैं. मैं इतना ही लेती हूं.'

'पूरी रात का कितना लेती हो?'

'4,000.'

'लेकिन 2 जने हैं हम लोग.'

'फिर तो 6,000 लगेंगे.'

'6,000 ज्यादा हैं. चलो, 4,000 रुपए दे देंगे.'

वीडियो क्लिप देखते हुए श्रुति कांपने लगी. यही संवाद परसों रात में उसे सहज लगे थे, जबकि वीडियो में बम धमाके की तरह लग रहे थे. वह घबरा कर उठ बैठी और जल बिन मछली की तरह तड़पने लगी.

तभी पूजा की घंटी बजने लगी. श्रुति ने खिड़की खोली. उस की सास दामिनी पूजा शुरू कर चुकी थी. वह उठ कर बाथरूम में चली गई.

बाथरूम में भी श्रुति को चैन नहीं था. उस के दिमाग की सनसनाहट रोजमर्रा के कामों में रुकावट पैदा कर रही थी. कुछ देर बैठने के बाद वह उठ खड़ी हुई और बाहर निकल पड़ी. फिर किचन में जा कर चाय बनाने लगी.

"बहू, प्रसाद ले लो."

श्रुति ने पास जा कर सास के हाथों से प्रसाद लिया. प्रसाद लेते समय उस के हाथ थरथरा रहे थे, जिसे दामिनी

मेरी जिंदगी

मेरी जिंदगी में तुम चले आइए,
आ कर यहां फिर कभी न जाइए.

शोख सी मुसकराहट है आप की,
मैं देखती रहूं, आप मुसकराइए.

तुम्हीं मेरी जिंदगी के चांद हो सनम,
रोशनी से मेरा घर जगमगाइए.

प्यार की कशिश में गिरफ्तार हूं मैं,
आजाद हो कर अब किधर जाइए.

धड़कनों की सदा यों ही गूंजती रहे,
दिल चाहता है बस सुनते ही जाइए.

अहद ए वफा यों ही निभाएंगे हम,
जब भी जी चाहे हमें आजमाइए.

आसमां को जमीं पर उतार लाएंगे,
एक बार हुक्म तो जरा फरमाइए.

तेरा साथ मेरे लिए बेशकीमती है,
इस तोहफे को मुझे ही दे जाइए.

-प्रीति चौधरी 'मनोरमा'

ने भी महसूस कर लिया.

"क्या हुआ बहू? तबीयत तो ठीक है न?"

"हां... ठीक है," यह कहते हुए श्रुति किचन में घुस गई. चाय उबाल मार कर चूल्हे पर गिर रही थी. उस ने गैस बंद की और चाय कप में उड़ेलने लगी.

चाय कप में उड़ेलते हुए श्रुति ने महसूस किया कि सचमुच उस के हाथ कांप रहे थे. उस ने चाय का कप अपनी सास को थमाया.

दामिनी ने फिर महसूस किया कि श्रुति के हाथ कांप रहे थे. इस बार उस ने कहा तो कुछ नहीं, लेकिन श्रुति के चेहरे को गौर से देखा. श्रुति सास से नजरें नहीं मिला रही थी. वह चाय दे कर बच्चों को जगाने चली गई.

छोटा बेटा अपनी मां श्रुति के साथ सोता था, जबकि दोनों बेटियां अपनी दादी के पास सोती थीं.

सब को नाश्तापानी दे कर श्रुति सोने चली गई. यह उस का रोज का काम था. रातभर जागने के चलते सुबह उसे नींद बहुत आती थी. लेकिन आज नींद आंखों से गायब थी.

श्रुति सोचने लगी कि इस समय लाखों लोग यूट्यूब पर उस की वीडियो क्लिप देख रहे होंगे. अब वह घर से बाहर कैसे निकलेगी? लोगों को क्या जवाब देगी? अभी तो बच्चों को बहला लेगी, लेकिन जब बड़े होंगे तब? क्या वे उस के अतीत की काली परछाईं से बच पाएंगे?

इस तरह के अनेक सवाल श्रुति को परेशान कर रहे थे. लग रहा था कि उस की कनपटी की धमनियां फट जाएंगी. अगर यह दिल्ली नहीं कोई छोटी जगह रहती तो अब तक वीडियो क्लिप देख रहे लोग उसे तड़ीपार की सजा सुना चुके होते.

श्रुति इन्हीं खयालों में गुम थी कि मोबाइल फोन की घंटी बजने लगी. उस ने देखा कि पिताजी का फोन था. उस का कलेजा मुंह को आने लगा. उस ने सोचा कि बात पिताजी तक पहुंच चुकी है. उस ने फोन रिसीव नहीं की.

श्रुति का चेहरा पसीने से भीग गया. उस ने दुपट्टे से चेहरा पोंछा और मोबाइल फोन को किसी खतरनाक चीज की तरह देखने लगी.

घंटी फिर बजने लगी. श्रुति की मोबाइल फोन उठाने की हिम्मत नहीं हो रही थी. लेकिन मजबूरन उस ने कांपते हाथों से फोन उठाया.

उधर से पिताजी रोते हुए कहने लगे, 'श्रुति, तुम्हारी मां हमें छोड़ कर चली गई...'

श्रुति के हाथ से मोबाइल फोन छूट गया. वह फूटफूट कर रोने लगी. यूट्यूब वाली वीडियो क्लिप जो अंदर तूफान मचाए हुए थी, मां की मौत पर ज्वालामुखी की तरह फट पड़ी.

दामिनी भागीभागी आई. श्रुति को रोता देख बच्चे भी मां से लिपट कर रोने लगे. किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, लेकिन श्रुति को चुप कराते हुए सब रो रहे थे.

श्रुति ने अपनी सास का कंधा पकड़ कर कहा, "मां हमें छोड़ कर हमेशा के लिए चली गईं..."

दामिनी ने श्रुति को अपने सीने से चिपकाते हुए कहा, "बहू, सब्र करो. एक न एक दिन सब को जाना पड़ता है... और अभी मैं हूं न. एक मां चली गई तो क्या, दूसरी मां है न."

श्रुति सोच रही थी कि काश, इसी गम में यूट्यूब क्लिप वाला दर्द भी फना हो जाता तो कितना अच्छा होता, लेकिन यह दर्द फना होने वाला कहां था. श्रुति के हालात का फायदा उठा कर पैसे कमाने वाला वह घटिया इनसान आज मुसकरा रहा होगा, जबकि श्रुति के साथसाथ कई जिंदगियां तबाही के कगार पर पहुंच चुकी हैं.

बस में सवार परिवार के साथ मायके जा रही श्रुति सोच रही थी कि काश, इस बस का ऐक्सिडैंट हो जाता और सारे मुसाफिर मर जाते तो उस के सारे दुखों का अंत हो जाता. वह अनजाने में ही सही, अपने दुखों के साथ दर्जनों जिंदगियों का अंत चाहने लगी थी, लेकिन अगर इनसान की हर सोच हकीकत का रूप लेने लगे, तो फिर कुदरत का क्या काम रह जाए...

मां के क्रियाकर्म से फारिग हो कर श्रुति मध्य प्रदेश से वापस अपनी ससुराल दिल्ली लौट आई. राहत की बात यह रही कि मायके में किसी ने भी उस की वीडियो क्लिप का जिक्र नहीं किया.

जब कहीं से कोई शिकायत नहीं आई तो श्रुति का मन स्थिर होने लगा. कलेजे की धड़कन सामान्य होने लगी. धीरेधीरे फिर हौसला बढ़ने लगा.

इस मैट्रो सिटी में कौन क्या कर रहा है, इस से दूसरों को कोई मतलब नहीं रहता. बगल के फ्लैट में लोग मर कर सड़ जाते हैं, फिर भी पड़ोस वालों को खबर नहीं होती, तो वीडियो क्लिप वाली लड़कियों को भला कौन ढूंढ़ता फिरे.

2 महीने बाद श्रुति फिर अपने पुराने काम पर लौट आई थी. आज वह नीली साड़ी में बिना चश्मे के उसी पुल के नीचे अपने ग्राहक के इंतजार में खड़ी थी. ●

आयुर्वेद से आयुष्मान

रतन्स आयुर्वेदिक समाधान

प्र. मेरी पुत्री दाद की समस्या से पीड़ित है। उसकी समस्या के लिए आयुर्वेदिक उपाय बताएं। –एक पाठक, कानपुर.

उ. उनकी उपरोक्त समस्या के लिए आप आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से युक्त ***'एक्जोलीन'*** मल्हम दिन में दो बार नियमित रूप से प्रयोग करवा सकते हैं।

प्र. मैं २६ वर्षीय गृहिणी हूं, मेरे बाल बहुत कमज़ोर हैं, जिस वजह से कंघी करने पर बालों का बड़ा-सा गुच्छा निकलता है। उपाय बताएं। –चन्द्रिका देवी, देहरादून.

उ. बालों की जड़ों में तेल की मालिश जरूरी होती है, बालों को पोषण प्रदान करने के लिए आप ***'केश वरदान'*** हेयर रिवाइटलाइज़र तेल से नियमित रूप से मालिश कर सकते हैं।

प्र. मेरे पुत्र की उम्र १४ वर्ष है, उम्र के हिसाब से उसका शारीरिक विकास औसत ही है। कोई उचित सलाह दें। –राजेन्द्रसिंह, धनबाद.

उ. वैसे तो शारीरिक विकास अनुवंशिकता पर निर्भर करता है। फिर भी आप चाहें तो पाचन क्रिया ठीक कर ग्रंथियों को सक्रिय करने हेतु उन्हें ***हाईटॉप'*** सिरप नियमित सेवन करवा सकते हैं। उन्हें पौष्टिक भोजन दें साथ ही रस्सी कूद अथवा योगासन करवाएं।

प्र. मेरी समस्या यह है कि मेरे फेस की स्कीन पहले की अपेक्षा डल दिखने लगी है। उपाय बताएं। –रश्मिका, जबलपुर.

उ. त्वचा को पोषण प्रदान करने के लिए आप हर्बल तत्वों से युक्त ***'सुगंधा वर्णनिखार क्रीम'*** दिन में दो बार हल्के हाथों से नियमित रूप से चेहरे पर लगा सकते हैं। त्वचा को सप्ताह में दो बार स्टीम दें।

प्र. मेरी आयु ३८ वर्ष है, पिछले कुछ समय से मुझे शरीर में भारीपन महसूस होता है, कृपया उपचार बताएं। –एम. रमेश, मैसूर.

उ. संतुलित आहार लें, अपनी समस्या के लिए आप ***'ओबेरिड'*** कैप्सूल २-२ सुबह-शाम पानी के साथ सेवन कर सकते हैं। ***'ओबेरिड'*** कैप्सूल का नियमित ९० दिनों तक किया गया सेवन बहुत अच्छे परिणाम देता है।

प्र. मैं ३४ वर्षीय हूं, मुझे शरीर प्रकृति की सुदृढ़ता के लिए केवल कोई आयुर्वेदिक औषधि ही बताएं। –नीरजा, सहारनपुर.

उ. शरीर को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए आप आयुर्वेदिक पुष्टिवर्धक औषधि तत्वों से युक्त ***'वेटलिफ्टर'*** कैप्सूल १-१ सुबह-शाम एक गिलास दूध के साथ नियमित तीन माह तक सेवन कर सकते हैं।

प्र. मैं हकलाहट की समस्या से ग्रस्त हूं, बोलते समय शब्द अटक जाते हैं। समस्या का उपाय बताएं। –एक पाठक, सरगुजा.

उ. समस्या के लिए आप ***'वॉईस'*** सिरप २-२ चम्मच सुबह-शाम पानी के साथ नियमित ३ माह तक सेवन कर सकते हैं। साथ ही अपना आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु रोजाना कुछ समय आईने के सामने खड़े होकर खुद से बातें करें।

प्र. कृपया शरीर को उचित आकर्षण प्रदान करने का सुरक्षित उपाय बताएं। –एक पाठिका, उदयपुर.

उ. उपरोक्त समस्या के लिए ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर कैप्सूल्स दूध के साथ दिन में तीन बार सेवन कर सकते हैं एवं ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर जैल से रोज दो बार मालिश कर सकते हैं।

प्र. मेरी ८ वर्षीय बिटिया बेडवेटिंग की समस्या से ग्रस्त है। उसकी समस्या के लिए उपचार सुझाएं। –जयश्री, वडोदरा.

उ. समस्या हेतु आप उन्हें ***'बेडवेट'*** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार नियमित रूप से सेवन करवा सकते हैं। उनका आत्मविश्वास बढ़ाएं।

उपरोक्त सलाह रोगियों के लक्षणों को ध्यान में रखकर दी गई है. दवाओं का प्रयोग वैद्यकीय मार्गदर्शन में करें.

ratan ayurvedic
Ratan's
Sudol
Body Toner Gel
NEW XL PACK
Ratan's
सुडोल
बॉडी टोनर जैल
आयुर्वेदिक औषधि
HELPLINE
95166-16688
प्रमुख आयुर्वेदिक व मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध.
Buy online: www.ratanayurvedic.com

मुनिया मर चुकी थी

अब्दुल गफ्फार

मुनिया तो बहुत देर पहले ही मर चुकी थी, लेकिन अर्जुन अपनी पत्नी सुगंधी को बता नहीं रहा था और चुपचाप बेटी की लाश को कंधे पर लादे चल रहा था. वह सोच रहा था कि जैसे ही वह बताएगा, सुगंधी रास्ते में ही हिम्मत हार बैठेगी.

अर्जुन मुनिया का पिता जरूर था, लेकिन मुनिया की रगों में तो लाल बाबू का खून था. इन बातों को नजरअंदाज कर के वह बस चलता चला जा रहा था. पीछेपीछे सुगंधी भी बेतरतीब आंचल और बिखरे हुए बालों को समेटते हुए दौड़ने के अंदाज में चलती जा रही थी.

रोहुआ गांव को पहले 'मिनी चंबल की राजधानी' कहा जाता था. अनुमंडल मुख्यालय से 150 किलोमीटर दूर. आज भी न वहां बिजली है, न लैंडलाइन फोन और न मोबाइल का टावर. ये तमाम सुविधाएं अबतब पहुंचने ही वाली हैं, लेकिन फिलहाल तो चारों तरफ बीहड़ों से घिरा यह गांव आज भी दुनिया की अनेक सुविधाओं और बदलते सामाजिक माहौल से कोसों दूर है.

लाल बाबू अर्जुन का बड़ा भाई था. अर्जुन की भाभी भरी जवानी में ही गुजर गई थीं, तब से लाल बाबू ने दूसरी शादी नहीं की थी. ब्रह्म स्थान पर बैठ कर ताश खेलने और पानी भरने के लिए आने वाली बहनबेटियों को घूरने में ही उस का सारा दिन गुजरता था.

सुगंधी की उम्र तब 22 साल थी, जब अर्जुन उसे ब्याह कर लाया था. अर्जुन सूरत की एक कपड़ा फैक्टरी में सुपरवाइजर का काम करता था.

शादी के ठीक एक दिन पहले उस फैक्टरी में आग लग गई. पोस्ट औफिस से एक टेलीग्राम आया कि 'फौरन चले आओ. बरबाद हो चुके कारखाने को संवारने में तुम्हारी मदद की जरूरत है.'

चूंकि अगले दिन ही शादी थी, इसलिए अर्जुन का जाना मुमकिन न हो सका.

शादी की अगली सुबह मेहमानों से भरा घर और नईनवेली दुलहन को छोड़ कर अर्जुन को जाना पड़ा. वह मुश्किल से सुगंधी का चेहरा भर देख पाया था. बिलकुल चांद का टुकड़ा थी वह, लेकिन फिलहाल उन दोनों का मिलन नहीं लिखा था.

सुगंधी की आंखों में तैरते आंसू छोड़ कर उस ने अपना बैग उठाया और सूरत के सफर पर रवाना हो गया.

समय अपनी रफ्तार से चलता रहा. इधर दिन गिनगिन कर सुगंधी कैद में बुलबुल की तरह फड़फड़ाती रही और उधर अर्जुन घर लौटने के लिए बेचैन रहा.

हजारों अरमान संजोए तकरीबन अर्जुन 4 महीने बाद जब घर वापस लौटा, तो उस पर मानो बिजली सी गिर गई. पति के परदेश से लौटने की खुशी में तो सुहागनें मोर की तरह नाचती हैं, लेकिन सुगंधी का चेहरा बिलकुल धुआंधुआं सा था.

अर्जुन को शक हुआ. उस ने सुगंधी को अपने आगोश में जकड़ते हुए पूछा, "क्यों उदास हो सुगंधी? क्या मेरे आने से तुम खुश नहीं हो?''

सुगंधी ने रोते हुए अर्जुन को सबकुछ सहीसही बता दिया, "मेरे पेट में पाप पल रहा है. मैं आप को मुंह दिखाने के लायक नहीं रही. जब आप को जाना ही था, तो मुझे मेरे घर छोड़ आते. आप की सुगंधी वहां अपवित्र होने से बची तो रहती."

झन्न से कुछ टूटा अर्जुन के भीतर और उस ने वहशत भरी आवाज में पूछा, "कौन है वह?"

सुगंधी ने रोते हुए बताया, "जेठजी महीनों से मेरे साथ जबरदस्ती करते आ रहे हैं. मैं 2 महीने के पेट से हूं. अब आप आ गए हैं... या तो मुझे मार डालें या उस पापी को मार डालें."

अर्जुन माथा पकड़ कर बैठ गया. वह सोच रहा था कि काश, फैक्टरी में आग न लगी होती और उसे जाना न पड़ता. उस के मुंह से इतना भर निकला, "सबकुछ अचानक हुआ जो मुझे जाना पड़ा... उफ..."

सुगंधी की सास तो बहुत पहले ही मर चुकी थीं. ससुरजी चलनेफिरने में लाचार थे. घर में दूसरा कोई सदस्य था नहीं, इसलिए लाल बाबू को मुंह काला करने का भरपूर मौका और माहौल मिला था.

नईनवेली दुलहन सिसकती रही और कुछ न कर सकी. गांव में न मोबाइल, न लैंडलाइन फोन. 150 किलोमीटर दूर मायका और 1,500 किलोमीटर दूर साजन परदेश में. आखिर अपने लुटने का संदेश भेजे भी तो कैसे भेजे.

अचानक अर्जुन की आंखें लाल हो गईं, दांत पर दांत बजने लगे, "इतना बड़ा अनर्थ..." इतना कह कर वह कुछ सोचने लगा और देर तक सोचता रहा, फिर धीरेधीरे शांत होने लगा.

अर्जुन सीधासादा नौजवान था. शहर में रह कर भी गांव की मासूमियत को अपने अंदर संजोए हुए था. बड़े भाई की इस घिनौनी करतूत पर किसी हिंसक कार्यवाही के बजाय वह रोने लगा और भाई से कुछ न पूछ कर खामोशी की चादर ओढ़ कर पलंग पर बैठ गया. न कुछ खाया, न कुछ पीया.

देर रात तक दोनों पतिपत्नी विपरीत दिशा में मुंह कर के सोने की नाकाम कोशिश करते रहे. दोनों तरफ से सिर्फ सिसकियों की आवाजें आती रहीं.

सुबह होने से पहले चुपके से मुंहअंधेरे बिना किसी को कुछ बताए अर्जुन सुगंधी को ले कर सूरत के लिए निकल गया.

सूरत में इस घटना को जानने वाला कोई नहीं था. अर्जुन ने सोचा कि न तो सुगंधी कहीं से कुसूरवार है और न ही इस के पेट में पलने वाला बच्चा ही गुनाहगार है. फिर इन्हें सजा क्यों? किसलिए? लिहाजा, उस ने सुगंधी के पेट में पल रहे बच्चे को गिराने के बजाय उसे जन्म देने का फैसला किया.

छोटी सी नन्ही परी जब उन के घर में आई, तो उन की खुशियों का ठिकाना न रहा. इस तरह नाजुक, दूध की धुली, खूबसूरत इतनी ज्यादा कि क्या कहने.

बच्ची को देख कर अर्जुन के मन में एक पल के लिए कराह सी महसूस तो हुई, लेकिन अगले ही पल उस ने अपने खयाल को यह कहते हुए दरकिनार कर दिया कि यह मासूम तो फरिश्ता है, और फिर खून मेरा न सही, मेरे ही भाई का तो है.

बहरहाल, देखतेदेखते 4 साल गुजर गए. बीती बातें भूल कर वे दोनों अपनी नई दुनिया में खुश थे.

सूरत में जिंदगी बड़े आराम से कट रही थी कि अचानक लौकडाउन घोषित हो गया. हर तरफ कोरोना की दहशत फैल गई. फैक्टरियां बंद. दुकानें बंद. बाजार बंद. सवारियां बंद और काम बंद. फिर तो गांव लौटने के सिवा कोई चारा न बचा.

अर्जुन का छोटा सा परिवार, जो अपने गांव कभी वापस नहीं लौटने की कसमें खा चुका था, अब गांव लौटने के लिए सवारियों की तलाश करने लगा, पर तमाम सवारियां बंद थीं. बीमारी फैलने के डर से सरकार ने बिना किसी सूचना के अचानक सबकुछ बंद कर दिया था.

मां, बाप और बेटी, तीनों 21 दिनों तक सवारी खुलने के इंतजार में बैठे रहे. बाहर देखने में न कहीं बीमारी नजर आ रही थी और न ही कोई मर रहा था. सबकुछ सामान्य होते हुए भी, सबकुछ बंद था.

21वें दिन चलने के लिए वे अपना बैगबक्सा समेट ही रहे थे कि फिर से लौकडाउन लग गया और उन्हें फिर रुक जाना पड़ा.

4 दिन बाद फैक्टरी में काम करने वाले बिहार के एक मजदूर ने अर्जुन को बताया, "आज रात में चुपकेचुपके 2 ट्रक कपड़ा गोरखपुर जाने वाला है. एक ट्रक

ड्राइवर से बात हुई है. वह हमें छिपा कर ले जाने के लिए तैयार है, लेकिन एक सवारी के 1,000 रुपए लेगा."

अंधे को क्या चाहिए दो आंखें... अर्जुन फौरन तैयार हो गया. फिर इन के साथ 5 और मजदूर भी तैयार हो गए और दोनों ट्रकों में छिपछिपा कर सभी लोग गोरखपुर तक पहुंचे. लेकिन वहां से भी आगे जाने के लिए कोई सवारी नहीं थी. अलबत्ता, सैकड़ों लोग पैदल ही बिहार जा रहे थे.

फिर इस तरह ये लोग भी पैदल जा रहे मजदूरों के जत्थे में शामिल हो गए. कुछ दूर तक तो साढ़े 3 साल की मुनिया भी फुदकफुदक कर चलती रही, उस के बाद वह थक कर चूर हो गई. फिर कभी मम्मी, तो कभी पापा के कंधे पर सवार हो कर सफर करती रही.

तकरीबन 40 किलोमीटर तक चलने के बाद सारे मुसाफिर थकहार कर बैठ गए. अब किसी में आगे जाने की हिम्मत न रही. सब के पैरों में छाले पड़ चुके थे. शाम ढलने लगी थी. फिर एक सुनसान जगह पर तकरीबन 20-22 मजदूर अपनीअपनी चादर बिछा कर सो गए.

अचानक सुगंधी बोली, "अरे, मुनिया का शरीर तो बुखार से तप रहा है..."

अर्जुन ने उस का माथा छू कर देखा. आग की तरह गरम था. मुनिया हांफ भी रही है.

अब क्या किया जाए. इस सुनसान जगह पर डाक्टर तो दूर दवा की दुकान भी मिलना नामुमकिन था. मजदूरों ने राय दी कि यहां पड़े रहने से अच्छा है कि इसे ले कर भागो. जितनी जल्दी डाक्टर के पास पहुंच जाओगे, उतना ही अच्छा होगा. 20 किलोमीटर बाद गंगाजी पर पुल पड़ेगा और उस के बाद कुछ दूर तक जंगल. सुबह होने तक अपने ठिकाने पर पहुंच ही जाओगे.

सुगंधी हायहाय करते हुए बोली, "बैगबक्सा इन लोगों के हवाले करो... छोड़ो... और चलो जल्दी, मुनिया को ले कर चलते हैं."

फिर सामान का मोह त्याग कर मुनिया को बारीबारी अपने कंधों पर लादलाद कर पतिपत्नी चलने लगे. चलने क्या लगे, तकरीबन दौड़ने लगे.

सुगंधी हांफतेकांपते बोलती जा रही थी, "बस, किसी तरह मेरी बच्ची ठीक हो जाए..."

चलतेचलते भोर होने लगी. जैसे ही पुल पर पहुंचे कि उन्हें पुलिस वालों ने रोक लिया.

पुलिस वालों की तफतीश में वह राज खुल गया, जो अर्जुन छिपाए हुए चल रहा था... मुनिया मर चुकी थी... तकरीबन घंटेभर पहले.

यह देखते ही सुगंधी बेहोश हो कर गिर पड़ी. अर्जुन ने मुनिया को पुल के पास जमीन पर लिटाया और सुगंधी को संभालने लगा. एक पुलिस वाले ने बोतल का पानी दिया. अर्जुन उस के चेहरे पर पानी की छींटें मारने लगा.

कुछ देर बाद 'मुनियामुनिया' कहते हुए सुगंधी होश में आ गई.

"मुनिया मर चुकी है सुगंधी," इतना कह कर अर्जुन भी रोने लगा.

सुगंधी बावली सी हो कर मुनिया को सीने से लगा कर 'मुनियामुनिया' बुलाती रही, लेकिन मुनिया अब कहां बोलने वाली थी.

पुल के ऊपर मांबाप की दर्दभरी चीखें और पुल के नीचे गंगाजी की फुफकार, दोनों उफान पर थे. चारों तरफ गम का साया पसर चुका था.

थोड़ी देर बाद सुगंधी के होश बहाल हुए, तो अर्जुन ने कहा, "उठो सुगंधी, मुनिया को गंगाजी बुला रही हैं."

सुगंधी टुकुरटुकुर मुनिया का मुंह निहारती रही और अपने पति की बातों का मतलब निकालती रही.

अर्जुन ने मुनिया को गोद में उठाया और पुल पर किनारेकिनारे चलने लगा. सुगंधी पीछेपीछे अर्जुन के कंधे पर झूल रही मुनिया की लट को संवारती चलती रही, उसे जीभर कर देखती रही.

फिर उफान मारती गंगाजी की बीच धारा में दोनों ने अपने कंपकंपाते हाथों से मुनिया को जल समाधि दे दी और बेसुध हो कर पुल पर गिर गए.

2 दिन बाद लुटेपिटे पतिपत्नी अपने घर पहुंचे. घर पर ताला लटका हुआ था. पड़ोसियों ने बताया कि उन के बाबूजी तो उसी महीने गुजर गए थे, जिस दिन दोनों घर छोड़ कर गए थे, जबकि लाल बाबू को सालभर पहले एक औरत के साथ जबरदस्ती करते गांव वालों ने पकड़ लिया था और लाठीडंडों से पीटपीट कर मार डाला था.

यह सब सुन कर उन दोनों के चेहरों पर कोई मलाल नहीं दिखा. फिर सपाट चेहरों के साथ वे घर में दाखिल हुए और घर की मिट्टी को माथे से लगा कर रोने लगे. ●

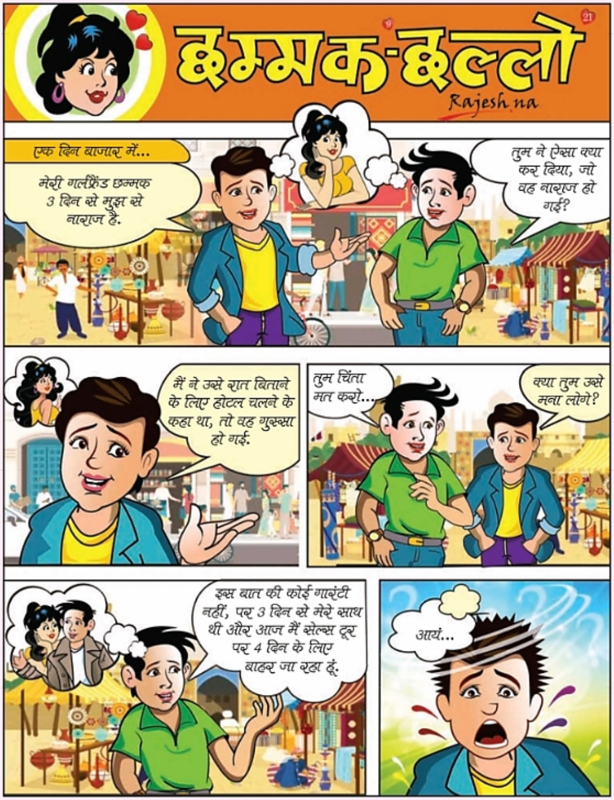
छम्मक-छल्लो
Rajesh.na
एक दिन बाजार में...
मेरी गर्लफ्रैंड छम्मक 3 दिन से मुझ से नाराज है.
तुम ने ऐसा क्या कर दिया, जो वह नाराज हो गई?
मैं ने उसे रात बिताने के लिए होटल चलने के कहा था, तो वह गुस्सा हो गई.
तुम चिंता मत करो...
क्या तुम उसे मना लोगे?
इस बात की कोई गारंटी नहीं, पर 3 दिन से मेरे साथ थी और आज मैं सेल्स टूर पर 4 दिन के लिए बाहर जा रहा हूं.
आयं...

गहना को मिली राहत

अभी हाल ही में पोर्न फिल्में बनाने के आरोप में फंसे शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा को अदालत से जमानत मिली, तो वे 2 महीने जेल में बिता कर घर वापस लौटे.

ऐसे ही जबरन पोर्न फिल्में बनवाने और उन्हें औनलाइन दिखाने के आरोप में फंसी एक हीरोइन गहना वशिष्ठ को भी सुप्रीम कोर्ट से राहत मिली है. कोर्ट ने अपने हालिया आदेश में कहा है कि गहना के खिलाफ दर्ज की गई तीसरी एफआईआर के आधार पर उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जा सकता है. हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने यह भी साफ किया है कि जांच में जब भी जरूरत पड़ेगी, तब गहना वशिष्ठ को क्राइम ब्रांच की पूरी मदद करनी होगी.

इस से पहले बांबे हाईकोर्ट ने गहना वशिष्ठ की अग्रिम जमानत की याचिका को खारिज कर दिया था. वैसे, अब भी गहना वशिष्ठ सोशल मीडिया पर अपनी बदनदिखाऊ तसवीरें अपलोड करती रहती हैं.

मलाइका अरोड़ा की चाहत

अपने बिजली गिराते हुस्न से लोगों को मदहोश कर देने वाली मलाइका अरोड़ा की अगर आप इस चाहत को सुन लेंगे, तो आप को भी खड़ेखड़े पसीना आ जाएगा.

वैसे तो मलाइका अरोड़ा अपने पति अरबाज खान को छोड़ कर हीरो अर्जुन कपूर के साथ रिलेशनशिप में हैं और बहुत खुश नजर आती हैं, लेकिन एक शो के दौरान उन्होंने अपनी पसंद का लड़का बताते हुए कहा, 'मुझे असल में ऐसा लड़का पसंद है, जो भयानक तरीके का फ्लर्ट हो. मुझे ऐसा लड़का पसंद होगा, जो 'किस' अच्छा कर सके.'

मलाइका अरोड़ा की इस चाहत से यह समझ में नहीं आ रहा है कि अर्जुन कपूर में ये दोनों खूबियां हैं या नहीं?

कृति सेनन कर देंगी हैरान

लंबे कद और छरहरे बदन की खूबसूरत हीरोइन कृति सेनन के हाथ में कई ऐसी फिल्में हैं, जो दर्शकों को हैरान कर सकती हैं. वे वरुण धवन के साथ फिल्म 'भेड़िया' में तो दिखाई देंगी ही, साथ ही फिल्म 'बाहुबली' फेम हीरो प्रभास और सैफ अली खान के साथ बड़े बजट की फिल्म 'आदिपुरुष' में भी उन का जलवा नजर आएगा.

इस के अलावा कृति सेनन अक्षय कुमार के साथ फिल्म 'बच्चन पांडे' में नजर आएंगी... और अब उन का नाम टाइगर श्रौफ के साथ फिल्म 'गणपथ' में भी पक्का माना जा रहा है, जिस के लिए वे जिम में खूब पसीना बहा कर कुछ अलग अंदाज में नजर आ रही हैं.

अब देखते हैं कि 'बरेली की बर्फी' कृति सेनन इन फिल्मों में अपनी अदाकारी की कितनी मिठास घोल पाती हैं. ●

सच्ची सलाह

मैं 36 साल का हूं. मेरी शादी को 8 साल हो गए हैं. मेरी पत्नी को लगता है कि मैं अब उसे प्यार नहीं करता हूं. वह मुझे हमेशा शक की निगाहों से देखती है. वह सोचती है कि उस के हिस्से का प्यार मैं किसी दूसरी औरत पर लुटा रहा हूं. यह सरासर झूठ है.

पर अपने शक के चलते मेरी पत्नी घर में तनाव का माहौल बनाए रखती है और मुझ पर चिल्लाती है. वह किसी तरह से मानने को तैयार नहीं है. इस बात से मैं बहुत ज्यादा परेशान हो जाता हूं और मेरा ब्लड प्रैशर बढ़ जाता है. मैं क्या करूं?

आप कहीं जानेअनजाने में अपनी पत्नी से दूर तो नहीं होते जा रहे हैं, जो उसे ऐसा लगता है. यह सवाल आप अपनेआप से पूछें, फिर पत्नी का शक प्यार से दूर करें. पत्नी के साथ ज्यादा से ज्यादा समय गुजारें, उसे घुमाएंफिराएं, होटल ले जाएं और सैक्स में ढीले न पड़ें. इस के लिए आप को कुछ दिन सब्र से काम लेना होगा.

पत्नियों का अपने पति पर शक करना कोई नई बात नहीं है, लेकिन यह शक और न बढ़े, इस बात का खयाल रखें. अपना ब्लड प्रैशर बढ़ाने से आप को कुछ हासिल नहीं होगा.

●

मैं 21 साल की हूं और पढ़ाई में बहुत अच्छी हूं. मुझे सरकारी इम्तिहान पास कर के अफसर बनना है. मैं उस के लिए खूब मेहनत भी कर रही हूं, पर मेरे पिता मेरी शादी करा कर अपनी जिम्मेदारी से छुटकारा पा लेना चाहते हैं. वे समझते ही नहीं हैं कि कैरियर बनने के बाद भी मेरी शादी हो सकती है. मैं क्या करूं?

आप के पिता की चिंता अपनी जगह उतनी ही ठीक है, जितनी कि खुद के कैरियर के लिए आप की अपनी दलीलें हैं.

आप उन से एक तयशुदा समय मांग लें कि इतने साल बाद नौकरी नहीं लगी तो शादी कर लूंगी. साथ ही, उन्हें यह एहसास कराती रहें कि लड़कियों की पढ़ाईलिखाई अच्छी हो तो घरवर अच्छा मिल जाता है और बुरे समय में नौकरी ही सहारा होती है.

अगर सरकारी नौकरी मिल जाए तो बुरा समय भी आने से डरता है. वे न मानें, तो आप भी अपनी जिद पर अड़ी रहें. ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR
Cream
MYFAIR
Cream

झुर्रियां काले घेरे छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX
Multivitamin, Multiminerals &
Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for
Strong Immunity
ZEE
ZEE DRUGS

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals
& Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2021-23/U(C) 163/2021-23 Saras Salil (Hindi) October-I
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 01 to 07, Published on 15/9/2021 Pgs.32

PARLE
Happy Happy™
Choco-Chip Cookies
PARLE
Happy Happy™
Choco-Chip Cookies
BISCUITS